A Daily News Magazine
भोपाल
सोमवार, 23 दिसंबर, 2024

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष -22 अंक-113 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्या: म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

पहली बात

मंदिर-मस्जिद : भागवत की भाव-भूमि पर उम्मीदों की कोपलें ?

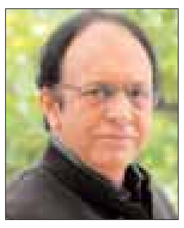
उमेश त्रिवेदी
संपादक

9893032101

आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने बीते गुरुवार पुणे के एक कार्यक्रम में अपने दो साल पुराने भाषण को शब्दों और समझाइश की नई इबारत में ढाल कर देश की सनातन संस्कृति एवं परम्पराओं को नई दिशाओं में मोड़ने का गुरूतर प्रयास किया है। लोकसभा के शीतकालीन सत्र में उपजी लोकतंत्र की संसदीय सड़ांध और सिसियांध से भभकते देश में मोहन भागवत का यह भाषण ताजा हवा के झोंके के समान है, जो सत्ता की संतप्त सियासत के संत्रास से राहत दिलाता महसूस होता है। त्रासद यह है कि संसद में पक्ष-विपक्ष की प्रायोजित, प्रसारित और प्रचारित नाटकीय और नौटंकीपूर्ण घटनाओं के कोलाहल में टीवी स्क्रीन पर गुम इस भाषण की सीखें और सुर्खियां चलते-चलते ही दिखीं और सुनाई पड़ीं, जबकि संघ-प्रमुख की हस्ती और हैसियत किसी से छिपी नहीं है।

संघ प्रमुख ने बीते 19 दिसम्बर 2024 को पुणे में 'हिंदू सेवा महोत्सव' के अंतर्गत आयोजित सहजीवन व्याख्यान माला में ये बातें कही हैं। विषय था- ''भारत-विश्वगुरू''। संघ-प्रमुख ने कहा कि मंदिर-मस्जिद के रोज नए विवाद निकालकर कोई नेता बनना चाहता है, तो ऐसा नहीं होना चाहिए, हमें दुनिया को दिखाना है कि हम एक साथ रह सकते हैं। भाषण की नसीहतें मस्जिद के नीचे मंदिर ढूंढने की प्रवृत्तियों को नकारती और निरूत्साहित करती हैं। संघ-प्रमुख पहले भी ऐसे बयान दे चुके हैं। सितम्बर 2022 में नागपुर के संघ के शिक्षा-वर्ग में भी उन्होंने मस्जिद के नीचे शिवलिंग ढूंढने की प्रवृत्तियों को नकारा था। राम-मंदिर निर्माण के बाद उन्होंने कहा था कि संघ अब ऐसे किसी आंदोलन में शरीक नहीं होगा। उनके सोच में निरन्तरता है कि ऐसे विवादों का सिलसिला खत्म होना चाहिए। सवाल यह है कि विवाद थम क्यों नहीं रहे हैं? इसके लिए मूलतः भाजपा कठघरे में खड़ी की जाती रही है कि चुनावी सफलताओं के लिए वह ध्रुवीकरण की राजनीति को बढ़ावा देती है। इसलिए विपक्षी कथनी और करनी के तराजू पर संघ और भाजपा दोनों पर प्रहार करने से नही चूकते हैं।

फिलवक्त सुप्रीम कोर्ट में उपासना स्थल कानून के प्रावधानों को चुनौती देने वाली याचिकाएं विचाराधीन हैं। सुप्रीम कोर्ट ने मस्जिद के नीचे मंदिर ढूंढने नए मामले दर्ज करने पर रोक लगा दी है। इस परिप्रेक्ष्य में संघ-प्रमुख के भाषणों की प्रासंगिकता इसलिए महती हो जाती है। सुप्रीम कोर्ट के अंतरिम आदेश और संघ-प्रमुख के भाषण की भाव-भूमि एक है। इसलिए लोगों में उम्मीद जगी है कि ऐसे कारनामों पर रोक लग सकती है।

संघ-प्रमुख का कहना है कि ''हमारे यहां सिर्फ हमारी ही बातें सही हैं, बाकी सब गलत है, यह नही चलेगा...अलग-अलग मुद्दे रहें, तब भी हम सब मिलकर रहेंगे, हमारी वजह से दूसरों को तकलीफ नहीं हो, इस बात का ख्याल रखेंगे, मुझे जितनी श्रद्धा अपनी बातों में होती है, उतनी श्रद्धा दूसरे की बातों में भी होनी चाहिए। हर धर्म और दूसरे देवी-देवताओं का सम्मान करना चाहिए।''

उन्होने उदाहरण दिया कि ''रामकृष्ण मिशन में आज भी ''बड़ा दिन'' मनाया जाता है, हम यह कर सकते हैं, क्योंकि हम हिंदू हैं। हम दुनिया में सब के साथ मिलजुल कर यह कर भी रहे हैं। यह सौहार्द्र अगर दुनिया में चाहिए तो अपने देश में यह मॉडल लाना होगा।'' राम-मंदिर आंदोलन के औचित्य पर उन्होंने कहा कि ''हिंदुओं की श्रद्धा की वजह से मंदिर का निर्माण हुआ, लेकिन हर दिन दुश्मनी के ऐसे प्रकरण निकाल कर नेता बनने का सोच ठीक नहीं है। ये पुरानी लड़ाइयां है। इन लड़ाइयों को भूलकर हमे सबको संभालना चाहिए। भारत की संस्कृति है कि सब लोग मिलकर रहें। कट्टरवाद और वर्चस्ववाद को भूलकर हमें भारत की समावेशी संस्कृति के तहत एकजुट होकर नियम-कानूनों के दायरों में जिंदगी जीना चाहिए।''

लोकसभा में भाजपा-कांग्रेस के झगड़ों की खबरों की दुनिया में बामुश्किल जगह बना पाने वाले भाषण के विभिन्न पहलुओं की गंभीरता उन लोगो के लिए विचारणीय है जो राजनीति से परे देश की चिंता करते हैं। किसी भी मुद्दे पर सवाल तो बेबात ही खड़े किया जा सकते हैं, लेकिन जिनके चश्मे साफ हैं, वो इन नसीहतों की गुरूता और गरिमा को बाकायदा महसूस करेंगे। फिर भी संघ-प्रमुख के भाषण की राह आसान नही है। गौरतलब है कि संघ-प्रमुख के उदगारों पर पक्ष-विपक्ष के बड़े-बड़े 'लाउड' स्पीकर सांय-सांय कर रहे हैं, लेकिन शामियानों में सिमटी सियासी महफिलों में तालियां बजने लगी हैं। बड़े और शीर्ष नेता खामोश हैं,लेकिन दूसरी तीसरी पांत के नेता और पार्टियां खुलकर प्रतिक्रियाएं दे रही हैं।

कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर लिखा है कि संघ प्रमुख मोहन भागवत कहते हैं कि ''कौन अल्पसंख्यक है और कौन बहुसंख्यक?'' यहां सब बराबर हैं। इस देश की रीत रही है कि यहां सब अपनी मर्जी से पूजा अर्चना कर सकते हैं, हमे सिर्फ सौहार्द से रहने और कानून का पालन करने की जरूरत है।'' शशि थरूर ने लिखा है कि वह खुद भी इससे बेहतर बयां नहीं कर सकते थे। उन्होंने उम्मीद जताई कि बाकी संघ परिवार भी भागवत के बयान पर ध्यान देगा।

ऑल इंडिया शिया पर्सनल लॉ बोर्ड के यासूब अब्बास ने संघ प्रमुख के भाषण पर प्रतिक्रिया में कहा कि यह एक सेहतमंद सोच है। यह देश में अच्छा माहौल पैदा करेगा। अब सरकार की जिम्मेदारी है कि वह हर मस्जिद के नीचे मंदिर ढूंढ कर नेतागिरि चमकाने वाले लोगो की लगाम कसे। जबकि बिहार भाजपा के अध्यक्ष ने इस पर टिप्पणी करने से इंकार कर दिया है।

सपा सांसद अफजाल अंसारी ने संघ-प्रमुख के कथन का स्वागत किया है। जबकि सपा के अन्य सांसद मोहिबुल्लाह नदवी ने कहा कि भाजपा झूठ का सहारा लेने वाली पार्टी है। सपा सांसद धर्मेन्द्र यादव ने मोहन भागवत से भाजपा को नियंत्रित करने की मांग की है। कांग्रेस सांसद मनीष तिवारी का कहना है कि संघ की कथनी और करनी में फर्क नहीं होना चाहिए। संघ-प्रमुख ये मशविरा उन लोगों को दें, जो यह सब करते हैं। वो कानून मे भरोसा रखें और उनका पालन करें।

सियासत से परे देश के प्रतिष्ठित मुसलमानों के एक नागरिक समाज समूह ने संघ प्रमुख की टिप्पणी की सराहना की है। समूह को उम्मीद है कि यह उन लोगों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होगा, जो देश के मूल बुनियादी ताने-बाने पर हमला कर रहे हैं। मुस्लिम सिविल ग्रुप ''सिटीजन्स फॉर फ्रेटरनिटी'' ने संघ-प्रमुख को लिखे एक पत्र में इस पर खुशी जाहिर की है।

उन्होंने लिखा है कि भारतीय मुसलमान और ईसाई होने के नाते हम समाज के एक वर्ग व्दारा हाल ही में की गई बातों और हाल ही के दिनों में घटनाओ से बेहद चिंतित हैं। इसके कारण गंभीर सांप्रदायिक तनाव पैदा हुआ है। आपका बयान महत्वपूर्ण है तथा भारत और दुनिया में अच्छी सोच रखने वाले सभी लोगों को उम्मीद देता है। पत्र पर पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त एस वाय कुरैशी, दिल्ली के पूर्व उप राज्यपाल नजीब जंग, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के पूर्व कुलपति जमीरूद्दीन शाह, पूर्व सांसद शाहिद सिद्दीकी और उद्योगपति सईद शेरवानी के हस्ताक्षर हैं।

संघ-प्रमुख के भाषण से उठने वाली तरंगों का ताप और तीव्रता राजनीति के सभी तटबंधों पर समान रूप से महसूस की जा रही है। राजनीति के शिखर पर सन्नाटा ताप का सबूत है। संघ-प्रमुख जो चाहते हैं अथवा जो इशारा कर रहें हैं, वो भाजपा, कांग्रेस, सपा, बसपा सहित लगभग सभी पार्टियों की राजनीति पर असर डालनेवाला है। यह सांप्रदायिक ध्रुवीकरण की राजनीति को प्रभावित करेगा। यह भाजपा के लिए चुनावी-मुश्किलें पैदा करेगा। कांग्रेस सहित सभी विपक्षी दलों को भाजपा से लड़ने के लिए नए सियासी औजारों को ढूंढना होगा, जो आसान नहीं है।

सुप्रभात

(टीवी पर एक युवा किसान के इंटरव्यू को देखकर)

कहना मुश्किल है
कि कितनी बार अनुपस्थिति दर्ज कराई
होगी उसने कक्षा में
दरवाज़े से सट कर बैठा वह
स्कूल की आख़िरी घण्टी बजते ही सब से
तेज दौड़ता हुआ
पहुंचता होगा अपने खेत पर

पाठ्यपुस्तक के पाठों के अलावा
कई और अध्याय भी जुड़े हुए थे उसकी
किताब में
कोई अदृश्य हाथ उसे गढ़ रहा था
लगातार कुदरत के चाक पर

माँ की थकान और पिता की
कमरतोड़ मेहनत के
कई बीज अंकुरित हो रहे थे उसके भीतर
आज उसके पैर मजबूती से जमे हैं
पहाड़ खोद कर संवारी जमीन पर
ख्यात चैनल के समझदार एंकर को
आत्मविश्वास से आज
दे रहा है साक्षात्कार

उसके शब्दों में सुनाई दे रहा है
कृषक जीवन का सार
विनम्रता और आदर से सराबोर
सुरों से सजा संगीत
गूँज रहा है लहलहाती फसल के बीच

साहब यह फसल
छह महीने तक ज़िंदा रहती है
फिर गुज़र जाती है
उसकी गंवई भाषा में मिट्टी और
पसीने की महक आ रही है
टीवी के स्क्रीन से निकली सुगंध से
भर गया है मेरा ड्राइंग रूम।

– एकता कानूनगो बक्षी

प्रधानमंत्री मोदी को मिला कुवैत का सर्वोच्च सम्मान

● 'ऑर्डर ऑफ मुबारक अल कबीर' से किए गए सम्मानित ● अब तक 20 देश कर चुके हैं सम्मानित, बढ़ा देश का मान

कुवैत सिटी (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को कुवैत दौरे के दूसरे दिन सर्वोच्च सम्मान ऑर्डर ऑफ मुबारक अल कबीर से सम्मानित किया गया है। उन्हें ये सम्मान कुवैत के अमीर शेख मिशाल अल-अहमद अल-जबर अल-सबा ने दिया। ये सम्मान पाने वाले मोदी पहले भारतीय पीएम हैं। मोदी को किसी देश से मिलने वाला ये 20वां अंतरराष्ट्रीय सम्मान है। ऑर्डर ऑफ मुबारक अल कबीर कुवैत का एक नाइटहुड ऑर्डर है। यह कुवैत का सर्वोच्च सम्मान है। यह अवार्ड दोस्ती की निशानी के तौर पर राष्ट्राध्यक्षों और विदेशी शासकों और विदेशी शाही परिवारों के सदस्यों को दिया जाता है। इससे पहले यह पुरस्कार बिल क्लिंटन, प्रिंस चार्ल्स और जॉर्ज बुश जैसे विदेशी नेताओं को दिया जा चुका है।

भारत और कुवैत को वर्तमान ही नहीं, अतीत ने भी जोड़ा

मोदी ने कहा कि आज भारत रेमिटेंस के मामले में सबसे आगे है, तो इसका बहुत बड़ा श्रेय आप सभी मेहनतकश साथियों को जाता है। देशवासी भी आपके इस योगदान का सम्मान करते हैं। भारत और कुवैत का रिश्ता सभ्यताओं का, व्यापार-कारोबार का है। भारत-कुवैत अरब सागर के दो किनारे पर बसे हैं। हमें सिर्फ डिप्लोमेसी ने ही नहीं दिलों ने भी आपस में जोड़ा है।

कुवैत में भारतीयों ने भारतीयता का तड़का लगाया

मोदी ने कहा कि आपमें से कितने ही लोग पीढ़ियों से कुवैत में रह रहे हैं। बहुत सारे लोगों का जन्म ही यही हुआ है। हर साल यहां रहने वाले भारतीयों की संख्या बढ़ती जा रही है। आपने कुवैत के समाज में भारतीयता का तड़का लगाया है। आपने कुवैत के कैनवास पर भारतीय हुनर का रंग भरा है, यहां भारत के टैलेंट, टेक्नोलॉजी और ट्रेडिशन का मसाला मिक्स किया है। मैं यहां सिर्फ आपसे मिलने नहीं आया हूं बल्कि आप सभी की उपलब्धियों को सेलिब्रेट करने के लिए यहां आया हूं। पीएम ने कहा कि मैंने यहां काम करने वाले भारतीय मजदूरों और कर्मचारियों से मुलाकात की। ये साथी यहां कंस्ट्रक्शन से जुड़े हैं। इसके अलावा बाकी लोग भी दूसरे सेक्टर में पसीना बहा रहे हैं।

जन-कल्याण पर्व

केन-बेतवा लिंक परियोजना से हर खेत तक पहुँचेगा पानी : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी आधुनिक भागीरथ हैं। उन्होंने मध्यप्रदेश को समृद्ध और खुशहाल बनाने के लिये 2 बड़ी नदी जोड़ो परियोजनाएँ सौगात के रूप में दी हैं। इन परियोजनाओं से हर खेत को पानी और हर व्यक्ति को पेयजल उपलब्ध होगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी 25 दिसम्बर को पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी के नदी जोड़ो अभियान के संकल्प को पूरा करने छतरपुर जिले के खजुराहो आ रहे हैं। इस ऐतिहासिक कार्यक्रम के लिये मैं निवाड़ी जिले के सभी नागरिकों को आमंत्रित करता हूँ। मुख्यमंत्री डॉ. यादव रविवार को निवाड़ी में जन-कल्याण पर्व अंतर्गत आयोजित किसान सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि केन-बेतवा लिंक परियोजना से बुन्देलखण्ड के हर खेत तक सिंचाई के लिए पानी पहुंचेगा। प्रदेश में बिजली की पर्याप्त आपूर्ति के साथ अब कृषि कार्य, उद्योग और पेयजल के लिए भरपूर पानी भी उपलब्ध होगा। देश की पहली नदी जोड़ो परियोजना से निवाड़ी के साथ संपूर्ण बुन्देलखण्ड का चहुँमुखी विकास भी संभव हो सकेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रतिवर्ष एक अक्टूबर को धूमधाम के साथ निवाड़ी जिले के स्थापना दिवस को गौरव दिवस के रूप में मनाये जाने की घोषणा भी की। मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम स्थल पर एक पेड़-माँ के नाम'' पौधरोपण किया और राज्य सरकार की एक वर्ष की उपलब्धियों पर केन्द्रित विकास प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि केन-बेतवा परियोजना से निवाड़ी जिले के हर खेत में पानी और हर घर तक पेयजल की सुविधा मिलने के साथ पलायन भी रूकेगा और आने वाली पीढ़ी का भविष्य बेहतर बनेगा। उन्होंने रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून, पानी गए न ऊबरे, मोती मानस चून'' दोहा के माध्यम से पानी का महत्व एवं उपयोगिता के बारे में बताया।

अंतर्राष्ट्रीय वन मेले में जानें कहां से आये थे बाओबाब यानी माण्डू इमली के पेड़

● क्या है खुरासानी इमली? ● राजधानी के लोगों को जानने का अचूक मौका ● मप्र में हो रहा है संरक्षण

भोपाल। क्या राजधानी भोपाल और अन्य जिलों के लोग जानते हैं कि माण्डू इमली या खुरासानी इमली क्या होती है? कैसे दिखती है। इसे देखने का अचूक मौका राजधानी भोपाल के लोगों को मिला है। इसे भोपाल में चल रहे अंतर्राष्ट्रीय वन मेले में देखा जा सकता है। यह दुर्लभ पेड़ है। मध्यप्रदेश राज्य वन अनुसंधान संस्थान और मध्य प्रदेश राज्य जैव विविधता बोर्ड के परस्पर सहयोग से बाओबाब के पेड़ों के संरक्षण का ठोस प्रयास किया जा रहा है।

इसका वनस्पतिक नाम है एडनसोनिया डिजिटाटा या अफ्रीकी बाओबाब। यह बाओबाब जाति की सबसे व्यापक रूप से फैली हुई वृक्ष प्रजाति है। यह अफ्रीकी महाद्वीप और दक्षिणी अरब प्रायद्वीप यानी यमन ओमान क्षेत्र का मूल निवासी प्रजाति है। यह एक बड़े गोल क्षेत्रयुक्त वृक्ष होते हैं। यह लंबे समय तक जीवित रहने वाले वृक्ष हैं।

इतिहास

मध्य प्रदेश के धार जिले में ऐतिहासिक मांडू शहर भारत का एकमात्र स्थान है जहां बाओबाब के पेड़ बहुतायत में हैं। मांडू शहर की परिधि में करीब 1000 से 1200 पेड़ है। इतिहास में उल्लेख आता है कि बाओबाब पेड़ के बीज अफगान शासकों द्वारा या अरब व्यापारी द्वारा मांडू लाये गए थे जो 1400 ईस्वी के आसपास मांडू आए थे। बाओबाब वृक्ष को मांडू का विशेष वृक्ष माना गया है, इसलिए लोग इसे मांडू इमली भी कहते हैं। बाओबाब पेड़ स्थानीय लोगों के आय का साधन भी हैं। आश्चर्य की बात है कि हाल के दिनों में इन पेड़ों की संख्या में कमी आई है। मध्यप्रदेश राज्य सरकार ने इन पेड़ों के संरक्षण के लिए ठोस कदम उठाया है।

वैज्ञानिक जानकारी के अनुसार इन पेड़ों में समय-समय पर तने उगाने की क्षमता के कारण बाओबाब लंबे समय तक जीवित रह सकते हैं। रेडियोकार्बन डेटिंग से पता चला है कि कुछ पेड़ 2000 वर्ष से भी ज्यादा पुराने हैं। रेडियो कार्बन डेटिंग से मिली जानकारी के अनुसार जिंबॉब्वे के पांक बाओबाब लगभग 2450 वर्ष पुराना था जब 2011 में इसकी मृत्यु हो गई। यह अब तक का सबसे पुराना एंजियोस्पर्म माना गया है। दो अन्य पेड़ नामीबिया में डार्सलैंडबूम और दक्षिण अफ्रीका में ग्लेनको के लगभग 2000 वर्ष पुराने होने का अनुमान लगाया गया है। गृटबूम के नाम से जाने जाने वाला एक अन्य वृक्ष मरने के बाद आकलन कर 1275 वर्ष पुराना बताया गया।

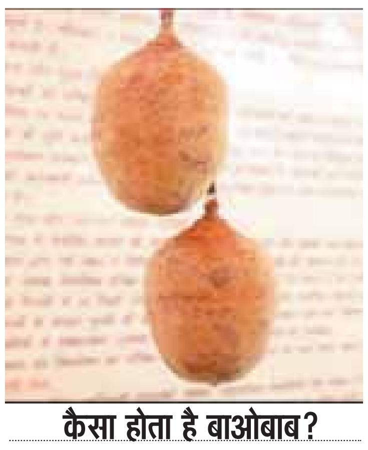

कैसा होता है बाओबाब?

हैदराबाद में गोलकुंडा किले के अंदर एक बाओबाब पेड़ है जो करीब 430 वर्ष पुराना है। अफ्रीकी बाओबाब ऐसे पेड़ से जो अक्सर अकेले होते हैं। वे पांच से 25 मीटर तक बढ़ते हैं। इनका तना आमतौर पर बहुत चौड़ा और घुमावदार या बेलनाकार होता है। अक्सर यह चौड़ा एवं फैला हुआ आकार का होता है। इसके तने 10 से 14 मीटर व्यास के हो सकते हैं। इसकी छाल भूरे रंग की और आमतौर पर चिकनी होती है। गर्मियों में पतली छाल निकलती है। मुख्य शाखाएं विशाल हो सकती है। फूल बड़े सफेद और लटकते हुए होते हैं। कलियां शंकु आकार के सिरे से गोल होती है। फुल दिखावटी होते हैं और कभी-कभी जोड़े में होते हैं लेकिन आमतौर पर लगभग 15 से 90 सेंटीमीटर लंबे लटकते डेंटल के अंत में एकल होते हैं और कभी-कभी जोड़ी में होते हैं। सभी पेड़ों में बड़े गोल कठोर फल लगते हैं जो लकड़ी के बाहरी आवरण के साथ 25 सेंटीमीटर तक लंबे हो सकते हैं। फल के खोल 6 से 10 मिलीमीटर मोटे होते हैं। बाओबाब के फल आकार में परिवर्तनशील होते हैं। गोल से लेकर बेलनाकार तक हो सकते हैं। फल के अंदर एक मांसल हल्के गुलाबी रंग का गूदा होता है। जैसे-जैसे वह सूखता जाता है गूदा सख्त होकर बीज का आवरण बना लेता है जिसे मसलने पर पाउडर बन जाता है। यह पाउडर स्वाद में खट्टा होता है।

बाओबाब को को कई नामों से जाना जाता है। हर नाम के साथ कुछ तथ्य जुड़े हैं। इसे सामान्य नाम में मंकी ब्रेड ट्री, उल्टा पेड़ और क्रीम ऑफ टाटरी आदि है। पन्द्रहवीं शताब्दी में मांडू के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी को अफगानिस्तान के खुरासान के सुल्तान ने उपहारस्वरूप कुछ बोलने वाले तोते और बाओबाब के पौधे भेंट किए थे। चूंकि यह खुरासान से लाए गए थे और इसका फल का गूदा इमली की तरह खट्टा होता है इसलिए इसे खुरासानी इमली कहते हैं। बाओबाब के वृक्ष को मांडू का विशेष वृक्ष माना गया है। इसलिए कई लोग इसे मांडू इमली भी कहते हैं। कई लोग गोरख इमली भी कहते हैं। बाओबाब बोतल के आकार का होता है और इसका तन चौड़ा होता है जो ऊपर की ओर बढ़ने पर सकरा हो जाता है। ऐसा लगता है कि मानो कोई पेड़ उल्टा लगा हो इसलिए इसे उल्टा पेड़ भी कहते हैं। इसकी विशालता और तने की मोटाई के अंदर खोल होता है। गुजरात की लोक कथाओं के अनुसार इसके बड़े खोल में चोरी का सामान को छुपाने के लिए उपयोग में लाते थे इसलिए वहां इसे चोरआम्बलो भी कहा जाता है। मांडू क्षेत्र में दुकानदार इसके फलों को स्मृतिचिन्ह के रूप में बेचते हैं। आकार के अनुसार इसकी अच्छी कीमत मिलती है। एक फल 200 रूपये तक में बिक जाता है। इसके अलावा इसका गूदा अलग से प्रति पैकेट 10 से 25 रूपये में बेचते हैं। बाओबाब अफ्रीका का एक पारंपरिक खाद्य पौधा है। यह अन्यत्र बहुत कम पाया जाता है। यह विटामिन सी का समृद्ध स्रोत है। इसमें प्रचुर मात्रा में एंटीऑक्सीडेंट होता है। इसका उपयोग पेट संबंधी विकारों के इलाज में होता है।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 18 °c न्यूनतम 13°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ सोमवार, 23 दिसंबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

नाथ संप्रदाय ने दुनिया को योग का वास्तविक अर्थ समझाया : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

दुनिया के सभी देश, भारत की सनातन संस्कृति को समझने की रखते हैं जिज्ञासा

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि दुनिया के सभी देश, भारत की सनातन संस्कृति को समझने की जिज्ञासा रखते हैं। भारत को जानने के लिए भारत में प्राचीनकाल से चली आ रही सनातन संस्कृति को जानना आवश्यक है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने प्राचीनकाल से चली आ रही भारत की योग परंपरा को संयुक्त राष्ट्र संघ से पूरे विश्व में मान्यता दिलाई स्थापित किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि नाथ संप्रदाय ने दुनिया को योग का वास्तविक अर्थ समझाया है। आदि गुरु गोरखनाथ के मार्गदर्शन में योग के विश्व के सर्वाधिक प्रसार में नाथ संप्रदाय का प्रमुख योगदान रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव रविवार को बुधनी तहसील के ग्राम जर्रापुर में आयोजित नाथ संप्रदाय के संत समारोह को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रत्येक मनुष्य की आत्मा में परमात्मा विराजमान हैं। उन परमात्मा को जानने का सबसे सुगम माध्यम योग है। गुरू गोरखनाथ अपनी योग्यता एवं कुशलता से अपने जीवन में आने वाली सभी कठिनाइयों एवं विपरीत परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बना लेते थे। यह सत्य है कि जिसका जन्म हुआ है, उसकी मृत्यु निश्चित है। मृत्यु से पहले अपने आप को जानने की कला गुरू गोरखनाथ ने दुनिया को सिखाई है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हम सभी सौभाग्यशाली हैं कि भारत की भूमि पर ऐसे संत हुए है, जिन्होंने इस भूमि को अपनी जन-कल्याण की भावना से पावन किया है। गंगा अपना अमृत समान जिस प्रकार जल सभी प्राणियों को निस्वार्थ भाव से उनके कल्याण के लिए प्रदान करती है, उसी प्रकार संत अपने जीवन के सभी सुखों को त्याग कर सभी प्राणियों एवं समाज के कल्याण के लिए कार्य करते हैं। उन्होंने कहा कि गुरू गोरखनाथ ने संत श्री भृतहरी के जीवन में आत्म चेतना को जगा कर उनका जीवन बदल दिया था।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्राचीनकाल से ही विश्व में अनेक संस्कृतियां रही हैं, पर समय के साथ अनेक संस्कृतियां विलुप्त हो गई पर भारत की सनातन संस्कृति अपनी मानव कल्याण की भावना के साथ सदैव अक्षुण बनी रही है।

संक्षिप्त समाचार

शाह के इस्तीफे के लिए अब कांग्रेस चलाएगी कैंपेन

● 26 जनवरी तक देशभर में प्रदर्शन होंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। गृह मंत्री अमित शाह की इस्तीफे की मांग को लेकर कांग्रेस पार्टी अगले साल 26 जनवरी तक देशभर में कैंपेन चलाएगी। 22 और 23 दिसंबर को कांग्रेस के नेता 150 से ज्यादा शहरों में प्रेस कॉन्फ्रेंस करेंगे। 24 मार्च को कलेक्ट्रेट पर मार्च निकालेंगे। 27 दिसंबर को कर्नाटक के बेलगावी में पार्टी बड़ी रैली होगी। कांग्रेस

महासचिव केसी वेणुगोपाल ने रविवार को बताया कि संसद सत्र में संविधान पर चर्चा के दौरान अमित शाह ने अपने भाषण में बाबा साहब का अपमान किया है। शाह के बयान से सभी आहत हैं। अब तक अमित शाह या प्रधानमंत्री ने इसके लिए माफी मांगने की कोशिश नहीं की। कांग्रेस गणतंत्र दिवस यानी 26 जनवरी तक इस मुद्दे को देशभर में उठाएगी। कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने भी जानकारी दी थी कि लोकसभा और राज्यसभा के कांग्रेस सांसद सीडब्ल्यूसी सदस्यों के साथ देश भर के 150 अलग-अलग शहरों में प्रेस कॉन्फ्रेंस करेंगे और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के इस्तीफे की मांग करेंगे। भाजपा ने भी जवाबी तैयारी शुरू कर दी है।

महाराष्ट्र में स्वास्थ्य व्यवस्था की हालत बेहद खराब

कैग की रिपोर्ट में बड़ा खुलासा

मुंबई (एजेंसी)। नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (सीएजी) ने महाराष्ट्र में स्वास्थ्य की लचर व्यवस्था को लेकर सरकार की कड़ी आलोचना की है। शनिवार को राज्य विधानसभा में पेश की गई रिपोर्ट में सरकार की कई विफलताओं की ओर ध्यान दिलाया गया है, जिसमें डॉक्टरों और पैरामेडिकल कर्मियों की कमी और दवाओं की अपर्याप्त आपूर्ति शामिल है। इसमें क्लिनिकल एस्टेब्लिशमेंट एक्ट लागू करने की

आवश्यकता पर भी बात की गई है। कैग ने पाया कि सार्वजनिक स्वास्थ्य और चिकित्सा शिक्षा विभाग द्वारा संचालित सुविधाओं में डॉक्टरों, नर्सों और पैरामेडिकल स्टाफ (क्रमश: 27 फीसदी, 35 फीसदी और 31 फीसदी) की भारी कमी है। रिपोर्ट में कहा गया है कि स्वास्थ्य सेवा संस्थानों की कमी के कारण सार्वजनिक स्वास्थ्य ढांचे पर अत्यधिक बोझ है, जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य सेवा संस्थान सार्वजनिक स्वास्थ्य मानकों में निर्धारित मानदंडों से अधिक आबादी की सेवा करते हैं। अनुमानित आबादी को ध्यान में रखकर बदलाव जरूरी है।

'चिल्लई कलां' से कांप रही घाटी, -4 पहुंचा पारा

भीषण ठंड का कहर जारी, कश्मीर में जम गए हैं झरने

एमपी-यूपी समेत कई राज्यों में बन रहे बारिश के आसार

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के उत्तरी राज्यों में तेज सर्दी का दौर जारी है। जम्मू-कश्मीर, लद्दाख और हिमाचल प्रदेश के कई इलाकों में में तापमान 0 डिग्री के नीचे बना हुआ है। हिमाचल में आज बर्फबारी का भी अलर्ट जारी किया गया है। इससे तापमान में और भी ज्यादा गिरावट हो सकती है। पंजाब-हरियाणा में भी शीतलहर के कारण तापमान में गिरावट दर्ज हुई। चंडीगढ़ में तापमान 0.8 डिग्री रिकॉर्ड किया गया। वहीं, पंजाब के आदमपुर इलाके में पारा 1.8 डिग्री रिकॉर्ड किया गया। पंजाब में घना कोहरा भी देखने को मिला। अमृतसर, तरनतारन, बठिंडा, लुधियाना और बरनाला में विजिबिलिटी 100 मीटर दर्ज की गई। बर्फबारी और तेज सर्दी के साथ मौसम विभाग ने कुछ राज्यों में बारिश का भी अलर्ट जारी किया है। उत्तर प्रदेश के 6 जिलों आज बारिश का भी अलर्ट जारी किया गया है। वहीं, मध्य प्रदेश राजस्थान में कल से बारिश होने की संभावना जताई गई है। जम्मू-कश्मीर में आज से चिल्लई कलां की शुरुआत हुई है। चिल्लई फारसी शब्द है, हिंदी में इसका मतलब 'बहुत ज्यादा ठंड' होता है। 40 दिन यहां काफी बर्फबारी होगी।

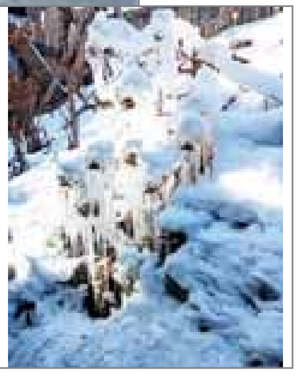

राजस्थान में अब खत्म होगा वाइस प्रिंसिपल का पद

जयपुर (एजेंसी)। राजस्थान में भजनलाल सरकार शिक्षा विभाग को लेकर बड़ा कदम उठाने जा रही है। इसके चलते अब प्रदेश के सरकारी विद्यालयों में वाइस प्रिंसिपल का पद समाप्त किया जाएगा। इसको लेकर शिक्षा विभाग की समीक्षा बैठक में यह निर्णय लिया गया है। इसके तहत अब वाइस प्रिंसिपल के पद को डाइंग कैडर बनाने पर सहमति हुई है, अभी जो वाइस प्रिंसिपल के पद पर कार्यरत शिक्षक हैं, उन्हें अब प्रमोशन दिया जाएगा, लेकिन इसके बाद इस पद पर किसी की भी नियुक्ति नहीं होगी। सरकारी विद्यालयों में वाइस प्रिंसिपल पद को समाप्त किए जाने को लेकर शिक्षक संघ लंबे समय से मांग कर रहे थे। उनका कहना है कि वाइस प्रिंसिपल पोस्ट के कारण उन्हें आर्थिक नुकसान हो रहा है। अब शिक्षक सीधे प्रिंसिपल के रुप में पदोन्नत हो पाएंगे, अभी व्याख्याता 4800 ग्रेड पे से पदोन्न होकर 5400 ग्रेड पे पर वाइस प्रिंसिपल बनते हैं।

अभिजोजन अधिकारियों का एक दिवसीय प्रशिक्षण हुआ आयोजित

भोपाल। राजधानी भोपाल जिले के अभिजोजन अधिकारियों का अनुसूचित जाति एवम अनुसूचित जनजाति अधिनियम पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन होटल राजहंस एमपी नगर में आयोजित किया गया। कायक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में बी एल प्रजापति, संचालक लोक अभिजोजन उपस्थित रहे। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि एल. डी. बौरासी पूर्व प्रधान एवम सत्र न्यायाधीश

मध्यप्रदेश, एवं रामेश्वर कुमरे प्रभारी संयुक्त संचालक अभियोजन रहे। संचालक श्री प्रजापति ने अधिकारियों को संबोधित करते हुए बेहतर अभिजोजन संचालन के निर्देश दिए और भोपाल डीपीओ राजेन्द्र उपाध्याय एवम उनकी टीम को कार्यशाला के सफल आयोजन हेतु बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

श्री बौरासी ने अनुसूचित जाति एवम जनजाति अधिनियम के बारे में विस्तृत जानकारी अभियोजन अधिकारियों को दी। उन्होंने जाति प्रमाण पर प्रस्तुत करने,,अधिनियम में उपधारणा के प्रावधान, पीड़ितों के अधिकार,न्यायालय के कर्तव्य, एवम अभिजोजन की भूमिका विषय पर अपने अनुभव को साझा किया। एडीपीओ ने एनडीपीएस एक्ट के बारे में व्याख्यान प्रस्तुत किया। श्रीमती सुधा विजय सिंह भदौरिया, ऋषिराज द्विवेदी, श्रीमती प्रियंका उपाध्याय एडीपीओ ने नवीन कानूनों पर चर्चा कर अधिकारियों की समस्याओं का समाधान किया। कार्यक्रम में अति. डीपीओ टी. पी गौतम, श्रीमती वंदना परते, एडीपीओ उदयभान रघुवंशी, अभिषेक बुंदेला, श्री मनोज पटेल, अनिल पटेल, आशीष त्यागी, श्रीमती स्नेहलता स्वामी श्रीमती हेमलता कुशवाहा,श्रीमती वर्षा कटारे, मनोज त्रिपाठी,आशीष दुबे, आशीष तिवारी, सुनील गौतम,सुश्री दिव्या शुक्ला, नवीन श्रीवास्तव एवं अन्य सभी अभियोजन अधिकारियों ने प्रतिभाग किया।

चौथा मोंटफोर्ट कप बालिका क्रिकेट टूर्नामेंट आयोजित

भोपाल। सेंट मोंटफोर्ट स्कूल पटेल नगर भोपाल में दो दिवसीय बालिका अन्तर्विद्यालयी क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन किया गया। इस टूर्नामेंट में भोपाल नगर के आठ प्रतिष्ठित स्कूलों ने भाग लिया। विद्यालय प्राचार्य ब्रदर मोनाचन केके ने दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इसके पश्चात विद्यालय के छात्रों द्वारा प्रार्थना गीत गाया गया। मोन्ट फोर्ट स्कूल क्रिकेट टीम की कप्तान दिव्यांशी सक्सेना ने सभी दलों को खेल के प्रति ईमानदारी एवं संयमितता की शपथ दिलाई। प्राचार्य ब्रदर मोनाचन ने अपने अभिभाषण में सभी को खेल भावना से खेलने के लिए प्रेरित किया तथा सभी को शुभकामनाएं दी। इसके बाद सभी स्कूल की टीमों का परिचय दिया गया तथा प्राचार्य द्वारा टूर्नामेंट ओपन की घोषणा की गई। खेल के अंतिम दिन के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. सुमित सिंह उपस्थित रहीं। टूर्नामेंट में मोंट फोर्ट विद्यालय की टीम ए ने जीत हासिल की तथा सेंट पॉल स्कूल ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। मुख्य अतिथि ने अपने उद्बोधन में जीती हुई टीम को एवं उनके प्रतिभागियों को बधाई एवं शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि खेलों में ईमानदारी तथा आपसी सामंजस्य अत्यंत आवश्यक है। हार और जीत तो प्रत्येक व्यक्ति के हिस्से में आती है। इसके पश्चात मुख्य अतिथि महोदय ने जीती हुई टीम को ट्रॉफी तथा मैडल प्रदान किया इसके पश्चात विद्यालय प्राचार्य द्वारा अतिथि को स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। अंत में विद्यालय के माध्यमिक विभाग के हेड बॉय मास्टर अंश तिवारी एवं अनन्या गौर ने आभार प्रदर्शन किया तथा राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

एम्स भोपाल की टीम को APPICON 2024 में द्वितीय पुरस्कार

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में, संस्थान निरंतर चिकित्सा अनुसंधान में महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल कर रहा है। हाल ही में, एम्स भोपाल की टीम ने प्रतिष्ठित ESIC चेन्नई APPICON 2024 में पोस्टर सत्र में द्वितीय पुरस्कार जीता है। इस पुरस्कार प्राप्त अनुसंधान का नाम 'हठ योग के सूर्य नमस्कार और हल्के तीव्रता वाले स्थिर साइक्लिंग व्यायाम के हृदय दर परिवर्तनशीलता पर तुलनात्मक प्रभावः एक पायलट अध्ययन' था। इस अध्ययन के प्रमुख अन्वेषक डॉ. वरुण मल्होत्रा थे, और उनकी टीम में तनुशा पाठक, दानिश

जावेद, संतोष वाकोड़े, अविनाश ठाकरे, रागिनी श्रीवास्तव, सुनील चौहान और एफ. सिड्राल शामिल थे। डॉ. मल्होत्रा ने इस शोध को प्रस्तुत किया।

इस अध्ययन ने हठ योग के सूर्य नमस्कार और हल्के तीव्रता वाले स्थिर साइक्लिंग के हृदय दर परिवर्तनशीलता (HRV) पर प्रभावों की तुलना की। यह HRV हृदय स्वास्थ्य और तंत्रिका तंत्र के संतुलन का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। अध्ययन से यह पाया गया कि सूर्य नमस्कार ने विश्राम, तंत्रिका तंत्र के संतुलन और हृदय स्वास्थ्य में सुधार किया, जबकि स्थिर साइक्लिंग ने हृदय पर अस्थायी दबाव डाला, लेकिन पुनर्प्राप्ति में मदद की। यह शोध यह बताता है कि योग शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य सुधारने के लिए एक अच्छा विकल्प हो सकता है।

प्रो. सिंह ने इस उपलब्धि की सराहना करते हुए कहा, 'यह उपलब्धि एम्स भोपाल के अनुसंधान के प्रति समर्पण को दर्शाती है। हमारे संकाय का परिश्रम न केवल व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा दे रहा है, बल्कि संस्थान की प्रतिष्ठा को भी मजबूत कर रहा है।'

लक्ष्य व दिशा सही हो तो समस्त बाधाएं हो जाती हैं दूर : उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

विंध्य की उड़ान एवं विंध्य विस्तार सम्मान समारोह में उत्कृष्ट कार्य करने वाले व्यक्तियों को किया सम्मानित

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि विन्ध्य में विकास की अपार संभावनाओं के अनुरूप विकास कार्य किये जा रहे हैं। लक्ष्य व दिशा सही हो तो बांधाएं अपने आप ही दूर हो जाती हैं। जनप्रतिनिधियों का दायित्व है कि वह जनता को परिणाम दें। विन्ध्य में हरित, औद्योगिक व पर्यटन क्रांति से आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त हो रहा है। वह दिन दूर नहीं जब रीवा जिले की एक-एक इंच भूमि सिंचित होगी। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि नदी जोड़ो अभियान के सार्थक परिणाम सामने आयेंगे और प्रदेश में सम्पन्नता आयेगी। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय रीवा कैम्पस के बलदेव सिंह सभागार में विस्तार न्यूज चैनल द्वारा आयोजित विन्ध्य की उड़ान एवं विन्ध्य विस्तार सम्मान समारोह को सम्बोधित कर रहे थे।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल, पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री एवं श्रम मंत्री और रीवा जिले के प्रभारी मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल, राज्य मंत्री नगरीय विकास एवं आवास श्रीमती प्रतिमा बागरी ने विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले विशिष्ट जनों को शाल श्रीफल व प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने विन्ध्य की विभूतियों को शुभकामनाएँ दी तथा उज्जवल भविष्य की कामना की। सांसद रीवा श्री जनार्दन मिश्र, विधायक मैहर श्री श्रीकांत चतुर्वेदी सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

संसाधनों के साथ विंध्य के नागरिकों का जज़्बा क्षेत्र को विकास के मार्ग में कर रहा अग्रसर: मंत्री श्री पटेल- मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने कहा कि विन्ध्य में जल, जंगल की उपलब्धता के साथ ही यहां के लोगों में जज्बा है। खनिज की प्रचुरता व परिवहन सुविधाओं से यह क्षेत्र विकास के मार्ग पर अग्रसर है। गंगाजी के निकट से जुड़े इस क्षेत्र में संसाधनों की कमी नहीं है। आने वाले समय में विन्ध्य देश में अपना अग्रणी स्थान रखेगा। उन्होंने कहा कि विकास सामर्थ्य को बढ़ाता है। युवा पीढ़ी को आने वाले खतरे से सचेत रहते हुए नशे से दूर रहना होगा तभी सुनहरे कल का उदय होगा। उन्होंने रीवा व विन्ध्य क्षेत्र के उज्जवल भविष्य के लिये शुभकामनाएँ दी। राज्य मंत्री श्रीमती बागरी ने कहा कि विन्ध्य तेजी से विकास के मार्ग पर अग्रसर है। विकास, अधोसंरचना निर्माण व अन्य क्षेत्रों में सरकार के सहयोग से विन्ध्य उड़ान भर रहा है।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल भोपाल में विभिन्न पद/कार्य हेतु अस्थाई कुशल/अकुशल कर्मचारी की नियुक्ति(सिर्फ अस्थाई)

:: विज्ञप्ति ::

इस ग्रुप केन्द्र कैम्प परिसर के आवासीय व गैर-आवासीय भवनों के दिन-प्रतिदिन के रखरखाव का निष्पादन करने हेतु कुल-17 श्रमिक एवं कचरा संग्रह हेतु एक वाहन (ट्रैक्टर के साथ ट्रॉली एवं ड्राईवर तथा हेल्पर सहित) कुशल/अकुशल श्रमिक की नियुक्ति अस्थाई तौर पर किया जाना है।

भर्ती होने वाले अस्थाई कुशल/अकुशल श्रमिक को अधिकतम 89 दिनों के लिए भर्ती किया जायेगा तथा उनका दैनिक वेतन, केन्द्र सरकार के श्रम मंत्रालय के आदेश संख्या-F.No.1/7(1)/2024-LS-II) Dated 01/04/2024 एवं श्रमायुक्त कार्यालय, मध्यप्रदेश शासन, इन्दौर के पत्र कमांक-6/11/अन्वे/पॉच/2024/29501-750, इन्दौर, दिनांक 30/09/2024 में निहित आदेश के अनुसूची-क में ट्रेड के आधार पर दैनिक वेतन निर्धारित किया गया है के अनुसार भुगतान किया जायेगा जो कि मासिक तौर पर देय होगा। रिक्त/भर्ती किये जाने वाले पदों का विवरण निम्नानुसार है :-

क0 सं0	कार्य/पद का नाम	अभ्युक्ति (Wages Head)	अभ्युक्ति (for FLM Head)	अभ्युक्ति (मदिरा सब कैन्टीन लाभांश से तथा हिरामन गैस एजेंसी लाभांश से)
01	इलेक्ट्रीशियन(कुशल)	03	–	–
02	प्लम्बर (कुशल)	01	–	–
03	मेसन(कुशल)	01	–	–
04	सफाई कर्मचारी (अकुशल)	–	10	–
05	एक कचरा संग्रह हेतु वाहन (ट्रैक्टर साथ में ट्रॉली एवं ड्राईवर तथा हेल्पर सहित)	–	01	–
06	हिरामन गैस एजेंसी से गैस सिलेण्डर आवासीय भवनों में पहुंचाने हेतु (अकुशल)	–	–	01
07	मदिरा सब कैन्टीन में टैली साफ्टवेयर तथा अन्य कार्यालय संबंधित कार्यों को करने हेतु सिविल लिपिक (कुशल)	–	–	01
	कुल	05	10 एवं 01 कचरा संग्रह वाहन	02

इच्छुक व्यक्ति अपना आवेदन उप महानिरीक्षक/संपदाधिकारी, ग्रुप केन्द्र, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल, बंगरसिया, भोपाल (म0प्र0) के नाम पर लिखना होगा, जिसे ग्रुप केन्द्र के पराक्रम द्वार गेट नम्बर 02 से निम्न दस्तावेजों के साथ दिनांक 26/12/2024 सुबह 10:00 बजे मैन्स क्लब में रिपोर्ट करेंगे।

(सभी व्यक्तियों को कोविड-19 से बचाव हेतु भारत सरकार द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का पालन करना अनिवार्य है।)

संलग्न किये जाने वाले आवश्यक दस्तावेजों का विवरण :-

1) आवेदन पत्र।
2) आधार कार्ड की छायाप्रति।
3) कोई एक अन्य आई0डी0(पहचान पत्र)।
4) 02 नग पासपोर्टसाईज फोटोग्राफ।
5) इलेक्ट्रिशियन एवं पलम्बर हेतु आई0टी0आई0 व समतुल्य प्रमाणपत्र।
6) बचनबद्धता प्रमाण पत्र।
7) बैंक खाता का छायाप्रति।

छापा पड़ते ही चड्डी-बनियान में भागा था बिल्डर का करीबी

आयकर विभाग की जांच में खुलासा; विश्वनाथ साहू के भागते सीसीटीवी फुटेज भी मिले

भोपाल (नप्र)। आयकर विभाग द्वारा राजधानी के तीन बिल्डर्स और कंस्ट्रक्शन कंपनियों के कारोबारियों के यहां चल रही जांच में अब तक टैक्स चोरी की पूरी स्थिति साफ नहीं हो पाई है। आयकर विभाग का मानना है कि जांच पूरी होने में अभी दो से तीन दिन का समय और लग सकता है।

इस बीच, जांच के दौरान यह खुलासा हुआ कि त्रिशूल कंस्ट्रक्शन के खास व्यक्ति और कारोबारी विश्वनाथ साहू के घर जब रेड पड़ी तो कड़ाके की ठंड के बावजूद वह सुबह-सुबह चड्डी-बनियान में ही भाग गया। तब से वह गायब है और अब तक घर नहीं लौटा। साहू के घर पर आयकर अधिकारियों की जांच जारी है और वे उसके लौटने का इंतजार कर रहे हैं।

घर से भागने के मिले सीसीटीवी फुटेज

आयकर विभाग को साहू के घर से भागने के सीसीटीवी फुटेज मिले हैं, जो उसके घर पर लगे कैमरों से प्राप्त हुए। हालांकि, ये फुटेज सार्वजनिक नहीं किए गए हैं क्योंकि ये आयकर अधिकारियों द्वारा रिकॉर्ड नहीं किए गए थे। जांच में यह बात सामने आई है कि साहू, त्रिशूल कंस्ट्रक्शन के संचालक राजेश शर्मा का खास है और लेन-देन का काम देखता है। साहू की अपनी कंपनी भी है और वह जमीन के कारोबार में लिप्त है। कड़ाके की ठंड में घर से भागने के बाद से वह अब तक लापता है।

राजेश शर्मा और ब्रोकर्स से हो रहे खुलासे

आयकर विभाग की जांच में त्रिशूल कंस्ट्रक्शन के मालिक राजेश शर्मा और उसके लिए ब्रोकर का काम करने वाले अन्य लोग भी जांच के घेरे में हैं। इन लोगों के घरों और कार्यालयों पर की जांच में कई बड़े खुलासे हो रहे हैं। राजेश शर्मा के खिलाफ चल रही जांच अब बेनामी संपत्तियों की ओर बढ़ रही है।

आयकर विभाग ने अब तक गड़बड़ी की पूरी जानकारी सार्वजनिक नहीं की है, लेकिन जांच पूरी होने के बाद कुल टैक्स चोरी और संपत्तियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी जाएगी।

भाई की नाबालिग साली को भगाकर की शादी, केस दर्ज

भोपाल (नप्र)। बिलखिरिया क्षेत्र से 17 साल की नाबालिग को भगाने वाला उसके जीजा का रिश्ते का भाई निकला। पुलिस ने सागर ने नाबालिग को बरामद कर आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी ने नाबालिग से शादी कर उससे शारीरिक संबंध भी बनाए। मेडिकल रिपोर्ट के आधार पर आरोपी पर दुष्कर्म की धारा बढ़ाई गई है।

थाना प्रभारी उमेश चौहान ने बताया कि 16 दिसंबर को थाने आई मां ने बेटी के लापता होने की सूचना दी थी। नाबालिग की खोजबीन के लिए अलग-अलग टीमें बनाई गईं। फुटेज और मोबाइल लोकेशन के आधार पर पता चला, नाबालिग किसी युवक के साथ पंजाब गई थी। वहां से सागर आ गई है। जीजा के रिश्ते का भाई उसे भगा ले गया है। पुलिस ने घेराबंदी कर उसे सागर से गिरफ्तार कर लिया। नाबालिग का मेडिकल कराने के बाद उसे परिजनों को सौंप दिया गया है।

आधार कार्ड साथ ले गई थी नाबालिग

नाबालिग आधार कार्ड साथ ले गई थी। आधार के मुताबिक उसकी उम्र 17 साल है। इस बीच आरोपी को पता चला, उसने नाबालिग से शादी कर ली है। पूछताछ में आरोपी बोला-उसे पता था कि 17 साल की उम्र में बालिग हो जाते हैं। ऐसा उसने सुन रखा था। पुलिस ने आरोपी को कोर्ट में पेश किया। यहां से उसे जेल भेज दिया गया है।

नए साल के लिए निर्देश जारी किए

थाने में देना होगी जश्न की सूचना, हर्ष फायर किया तो दर्ज होगी एफआईआर

भोपाल (नप्र)। नए साल पर होने वाले जश्न की जानकारी थाने पर देना होगी। इसे लेकर डीसीपी जोन-2 संजय अग्रवाल ने निर्देश जारी किए हैं। इसमें स्पष्ट कर दिया है 31 दिसंबर की शाम 5 से 2 जनवरी 2025 की रात 12 बजे तक होने वाले सभी न्यू ईयर पार्टी की जानकारी देना होगी। सुरक्षा के लिहाज से पार्किंग से लेकर अंदर सीसीटीवी कैमरा लगवाना होंगे। आबकारी विभाग ने अगर अस्थायी लाइसेंस जारी किया है तो इसकी जानकारी देनी होगी। आयोजन स्थल पर हथियार प्रतिबंधित रहेंगे।

हर्ष फायर होने पर एफआईआर दर्ज की जाएगी। जहां आतिशबाजी होगी। वहां पर सुरक्षा मानकों का खासा ध्यान रखना होगा। डीसीपी जोन-2 संजय अग्रवाल ने बताया कि किसी भी तरह की गड़बड़ी होने पर संबंधित के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बाजना-रतलाम में हुई सड़क दुर्घटना पर किया शोक व्यक्त

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रतलाम जिले के बाजना क्षेत्र में हुई सड़क दुर्घटना में दो बाइक सवार युवकों की मृत्यु पर शोक व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दुख की इस घड़ी में प्रभावित परिवारों को मुख्यमंत्री स्वेच्छानुदान मद से दो-दो लाख रुपये स्वीकृत कर जारी करने के निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शोकाकुल परिजन के प्रति गहरी संवेदनाएं प्रकट की हैं। उन्होंने बाबा महाकाल से दिवंगतों की पुण्य आत्मा को अपने चरणों में स्थान देने और शोक संतप्त परिवार को गहन दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने स्टार्ट-अप से जुड़े युवाओं को दी बधाई

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदेश के युवाओं के स्टार्ट-अप 'क्रॉम्पटन अल टेक्नालॉजीस' के दक्षिण कोरिया में 'कम-अप 2024' में भारत का प्रतिनिधित्व करने पर बधाई दी है। यह आयोजन हाल ही में दक्षिण कोरिया में सियोल में संपन्न हुआ।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वास्तव में यह प्रदेश के लिए गर्व का क्षण है। युवाओं ने प्रदेश का मान बढ़ाया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश की स्टार्ट-अप नीति की सफलता से प्रेरित ये उपलब्धि हमारे युवाओं की सृजनशीलता और प्रतिभा का प्रतीक है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव से एमपी पीएससी अभ्यर्थियों के प्रतिनिधि मंडल ने की भेंट

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से एमपी पीएससी अभ्यर्थियों के प्रतिनिधि मंडल ने मुख्यमंत्री निवास स्थित समत्व भवन में भेंट की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार अभ्यर्थियों की मांगों पर सकारात्मक और सहयोगी दृष्टिकोण से विचार कर रही है, प्रतिनिधि मंडल द्वारा रखी गई मांगों के निराकरण के लिए उचित निर्देश दिए गए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि रोजगार के अधिक से अधिक अवसर उपलब्ध कराने के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध है। विभिन्न विभागों के रिक्त पदों पर भर्ती की प्रक्रिया जारी है, आगामी समय में अधिक पदों पर भर्ती के लिए विज्ञापन जारी होंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव से भेंट करने वाले प्रतिनिधि मंडल में सर्वश्री राधे जाट, सुरेंद्र पटेल, अभिषेक गौतम, कुलदीप सरकार, रंजीत कृष्णवंशी और सुरेंद्र यादव शामिल थे।

89 घंटे बाद एमपीपीएससी के छात्रों का प्रदर्शन समाप्त, रात 3 बजे धरना स्थल पर पहुंचे कलेक्टर- इंदौर में मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग के अभ्यर्थियों का चार दिन चला धरना-प्रदर्शन रविवार सुबह 5 बजे समाप्त हो गया। छात्रों का यह प्रदर्शन करीब 89 घंटे तक चला। प्रदर्शन में प्रदेशभर के करीब 2 हजार से अधिक छात्र शामिल हुए थे। प्रदर्शन के दौरान दो अभ्यर्थी आमरण अनशन पर बैठे हुए थे।

गुरुवार रात से आमरण अनशन पर बैठे अरविंद सिंह भदौरिया की हालत शनिवार को बिगड़ गई। जिसके चलते वे बेहोश हो गए। उन्हें ड्रीप चढ़ाई गई। अरविंद के साथ स्टूडेंट लीडर राधे जाट भी आमरण अनशन पर थे।

कलेक्टर ने ढाई घंटे तक की छात्रों से बातचीत- चार दिनों से मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (एमपीपीएससी) मुख्यालय के सामने अपनी मांगों को लेकर प्रदर्शन कर रहे छात्रों की मांगों को मान लिया गया है। आयोग की सहमति के बाद, कलेक्टर आशीष सिंह सहित प्रशासन के अधिकारी आधी रात को प्रदर्शनकारी छात्रों के बीच पहुंचे। उन्होंने ढाई घंटे तक उनके साथ चर्चा की और तड़के 5 बजे आंदोलन को समाप्त करवाया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव से अटॉर्नी जनरल ऑफ इंडिया श्री आर. वेंकटरमानी ने की भेंट

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से अटॉर्नी जनरल ऑफ़ इंडिया श्री आर. वेंकटरमानी ने मुख्यमंत्री निवास स्थित समत्व भवन में सौजन्य भेंट की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पुष्प-गुच्छ और शॉल भेंट कर श्री वेंकटरमानी का अभिवादन किया। साथ ही स्मृति चिन्ह के रूप में राजा भोज की प्रतिमा भेंट की। इस अवसर पर मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन उपस्थित थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अटॉर्नी जनरल ऑफ़ इंडिया को प्रदेश में संचालित जन-कल्याणकारी गतिविधियों और क्रियान्वित की जा रही विकास परियोजनाओं की जानकारी दी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश में विधिक सहायता और विधिक जागरूकता के लिए संचालित गतिविधियों से भी अवगत कराया।

सहारा की 200 करोड़ की जमीन 50 करोड़ में बेची

3 बिल्डर्स पर छापेमारी में खुलासा ; संपत्ति बेचकर निवेशकों को लौटानी थी राशि

भोपाल (नप्र)। भोपाल में त्रिशूल कंस्ट्रक्शन कंपनी, क्वालिटी ग्रुप और ईशान ग्रुप के संचालकों और इनसे जुड़े ब्रोकर्स के 52 ठिकानों पर आयकर कार्रवाई को चौथे दिन भी जारी रही। अभी तक की सर्चिंग में 8 करोड़ रुपए नकद, ज्वेलरी बरामद की जा चुकी है। ये आंकड़ा बढ़ सकता है।

जांच में त्रिशूल कंस्ट्रक्शन के राजेश शर्मा और उसके करीबियों के यहां से कई शैल कंपनियों और करोड़ों की बेनामी संपत्ति का पता चला है। शैल कंपनियों के जरिए एक से दूसरी में लेन-देन किया गया है। आयकर अधिकारियों के मुताबिक, जांच में दो दिन और लग सकते हैं।

सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बावजूद निवेशकों को नहीं लौटाई राशि- आयकर के छापे में सहारा समूह के आम निवेशकों के साथ हुई धोखाधड़ी के कागजात भी सामने आए हैं। सहारा समूह के जिम्मेदारों की मिलीभगत से भोपाल में 200 करोड़ से ज्यादा की 110 एकड़ जमीन मार्च 2022 में महज 50 करोड़ में बेच दी गई। सुप्रीम कोर्ट में 2014 में प्रस्तुत रिपोर्ट में इस जमीन की अनुमानित कीमत 125 करोड़ आंकी गई थी। प्रदेश की जिस कंपनी ने यह जमीन खरीदी है, उसका मालिकाना हक भाजपा विधायक के परिजनों के पास है। यह जमीन कोलार तहसील के मक्सी गांव में स्थित है। 11 मील बायपास स्थित इस बेशकीमती जमीन का मौजूदा बाजार मूल्य 2 करोड़/एकड़ से भी ज्यादा है।

हैरत की बात है कि सुप्रीम कोर्ट ने देशभर में सहारा इंडिया रियल एस्टेट कॉर्पोरेशन की संपत्तियों को बेचकर उसे प्राप्त राशि सेबी के खाते में जमा करने के आदेश दिए थे। सेबी के माध्यम से इस राशि को आम निवेशकों को लौटाया जाना था। लेकिन इस मामले में ऐसा नहीं किया गया। कंपनी सिनाप रियल एस्टेट ने इस जमीन की रजिस्ट्री के लिए मयंक चौबे को अधिकृत किया था। सहारा समूह की ओर से संतोष कुमार जैन ने सारी रजिस्ट्रियां कीं। मयंक चौबे को पूर्व मंत्री संजय पाठक के करीबियों में गिना जाता है।

जमीन का मालिकाना हक विधायक के परिजन के पास- सिनाप रियल एस्टेट प्राइवेट लिमिटेड का मालिकाना हक पूर्व मंत्री और भाजपा विधायक संजय पाठक के परिजनों के पास है। रजिस्ट्रार ऑफ कंपनी (आरओसी) में मौजूद दस्तावेजों के मुताबिक, कंपनी के 50 प्रतिशत शेयर निर्मला पाठक (माता) और 50 प्रतिशत शेयर यश पाठक (पुत्र) के पास है। इस कंपनी के प्रेफरेंशियल शेयर यूरो प्रतीक इस्पात लिमिटेड के पास हैं।

सहारा की मध्यप्रदेश में 1200 करोड़ की जमीन

इंदौर, भोपाल, जबलपुर, देवास, कटनी में सहारा समूह की करीब 1200 करोड़ की जमीन थी। इसमें से भोपाल में 110 एकड़, देवास में 107, जबलपुर में 103, ग्वालियर मे 161, इंदौर में 90 और कटनी में 99 एकड़ जमीन शामिल है। इनमें से कई संपत्तियां अब नीलम की जा चुकी हैं। सूत्रों के मुताबिक, जबलपुर व कटनी की जमीन भी बाजार मूल्य के बजाय कलेक्टर गाइडलाइन पर नाइसा देव बिल्ड प्राइवेट लिमिटेड को बेची गई। ये कंपनियां भी सिनाप रियल एस्टेट से ही जुड़ी हैं।

बिल्डर्स के ठिकानों पर 25 लॉकर मिले

बिल्डर्स के यहां छापे में मिले 25 लॉकरों में से कुछ को खोला गया है। इनमें बड़ी संख्या में सोने-चांदी के जेवर मिले हैं। इसका मूल्यांकन किया जा रहा है। आयकर की इसी कार्रवाई के दौरान डीएम इंफ्रा के डायरेक्टर रूपम सेवानी ने बुधवार सुबह अपना मोबाइल फोन तोड़ दिया था। डेटा रिकवर कराया जा रहा है।

एमपी में ठंड के बीच बारिश का अलर्ट

भोपाल, इंदौर-जबलपुर संभाग भीगेंगे ; उज्जैन-ग्वालियर में भी पानी गिरेगा

भोपाल (नप्र)। कड़ाके की ठंड का दौर खत्म होने के बाद अब मध्यप्रदेश में बारिश का सिस्टम एक्टिव हो रहा है। मौसम विभाग की मानें तो 23 दिसंबर से प्रदेश में हल्की बारिश हो सकती है। इससे भोपाल, इंदौर-जबलपुर के साथ उज्जैन और ग्वालियर संभाग भी भीगेंगे। ऐसा वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) के एक्टिव होने से होगा।

प्रदेश में दिसंबर में बारिश का ट्रेंड भी है। इस बार भी ऐसा ही मौसम रहेगा। सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया, 23 दिसंबर से बारिश का दौर रहेगा। पूर्वी और पश्चिमी दोनों ही हिस्सों में कहीं-कहीं बारिश होगी। इस वजह से दिन-रात के तापमान में 2 से 3 डिग्री की बढ़ोतरी और हो जाएगी, लेकिन सिस्टम के गुजरने के बाद सर्दी फिर से तेज हो जाएगी।

यहां कोहरा रहेगा- ग्वालियर, जबलपुर, श्योपुर, मुरैना, भिंड, दतिया, निवाड़ी, टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, कटनी, सागर, दमोह, सीधी और सिंगरौली में कोहरा रहा। भोपाल में धुंध देखने को मिली।

इंदौर में बीते 24 घंटे में दिन का पारा 26 डिग्री सेल्सियस जबकि रात का तापमान 13.9 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। रविवार सुबह से मौसम साफ है। हालांकि, ठंड का असर बरकरार है।

23 से 25 दिसंबर तक इन जिलों में बारिश

23 दिसंबर - भिंड, दतिया, शिवपुरी, अशोकनगर, विदिशा, सीहोर, रायसेन, नरसिंहपुर, नर्मदापुरम, हरदा, बैतूल, खंडवा, बुरहानपुर, अलीराजपुर, सागर, नरसिंहपुर, दमोह, पन्ना, छतरपुर, टीकमगढ़ और निवाड़ी में कहीं-कहीं बारिश हो सकती है।

24 दिसंबर- ग्वालियर, जबलपुर, भिंड, श्योपुर, दतिया, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर, विदिशा, राजगढ़, सीहोर, देवास, खरगोन, खंडवा, बुरहानपुर, सागर, छतरपुर, दमोह, नरसिंहपुर, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, सिवनी, पन्ना, कटनी, मंडला, डिंडौरी, अनूपपुर, शहडोल, उमरिया, मैहर, सतना, रीवा, मऊगंज, सीधी और सिंगरौली में भी हल्की बारिश होने का अनुमान।

25 दिसंबर - इंदौर, उज्जैन, डिंडौरी, मंडला, सिवनी, छिंदवाड़ा, रायसेन, सीहोर, राजगढ़, शाजापुर, आगर-मालवा, देवास, हरदा, खंडवा, बुरहानपुर, खरगोन, बड़वानी, अलीराजपुर, धार, झाबुआ, रतलाम, मंदसौर जिले में बूंदाबांदी हो सकती है।

रिवर्स कार देख अनियंत्रित हुई बाइक, युवक की मौत

भोपाल के बजरिया इलाके में सीसीटीवी में कैद हुआ घटनाक्रम

भोपाल (नप्र)। भोपाल के बजरिया इलाके में स्थित सेमरा कला में रहने वाले युवक की बाइक अचानक रिवर्स कार को देखने के बाद अनियंत्रित हो गई। इससे बाइक स्लिप होने के बाद कार से टकरा गई। चालक सिर में गंभीर चोट आने के बाद घायल हो गया।

अस्पताल में इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। घटनाक्रम शनिवार की सुबह का है। हादसे के सीसीटीवी फुटेज भी सामने आए हैं। पुलिस ने कार नंबर के आधार पर चालक के खिलाफ लापरवाही से वाहन चलाने का केस दर्ज कर लिया है। मामले की जांच की जा रही है।

पुलिस के मुताबिक शेखर लोधी पुत्र संजू लोधी (19) सेमरा कला का रहने वाला था। वह प्राइवेट कॉलेज से बीएससी फर्स्ट ईयर की पढ़ाई कर रहा था। इसी के साथ मंडीदीप की एक फैक्ट्री में जॉब करता था। हर रोज की तरह नौकरी पर जाने के लिए निकला था। घर से करीब 50 मीटर की दूरी पर उसकी बाइक को कार नंबर एमपी 09 सीए 2588 ने टक्कर मार दी।

हादसे में युवक गंभीर रूप से घायल हो गया था। मोहल्ले के युवकों ने घायल को हास्पिटल पहुंचाया। जहां इलाज के दौरान करीब एक घंटे बाद उसकी मौत तो गई। अस्पताल की सूचना पर पुलिस ने मर्ग कायम कर लिया है।

परिवार का बड़ा बेटा था शेखर

शेखर परिवार का बड़ा बेटा था। उससे छोटा एक भाई है। जिसका नाम शिवम है और वह प्राइवेट स्कूल में पढ़ाई करता है। शिवम स्कूल जाने के लिए तैयार हो रहा था। हादसे की सूचना के बाद अस्पताल पहुंचा। जहां उसे भाई की मौत की सूचना मिली। शेखर के पिता ऑटो चालक हैं। इधर पुलिस का कहना है कि कार चालक की लापरवाही के कारण हादसा हुआ है। अचानक रिवर्स कार गली से बाहर निकली। कार सामने देख बाइक चालक ने ब्रेक लगा दिए। इससे बाइक स्लिप होने बाद कार से टकराई।

जमानत पर रिहा हुआ कार चालक

कार चालक सरोज सिंह ने बताया कि युवक की मौत के बाद वह स्वयं थाने पहुंच गए थे। जहां कार नंबर के आधार पर मेरे खिलाफ केस दर्ज होने की जानकारी मिली। हालांकि, जमानत पर मुझे थाने से ही रिहा कर दिया गया है। हादसा बाइक चालक की गलती से हुआ। मैं कार को रिवर्स कर रहा था। इस दौरान बाइक चालक अपनी गलती से पीछे से मेरी कार में टकराया है। मैने ही उसे 108 की मदद से अस्पताल पहुंचाया था।

उत्सव मेला में 'मौत का कुआं' लोगों के आकर्षण का केंद्र बना

कुएं में बुलेट चलाने वाली लड़की ने 15 की उम्र में बाइक चलाना सीखा, दौड़ती गाड़ी पर खड़ी हो जाती है

भोपाल (नप्र)। आपने बाइक पर लड़कों को खतरनाक स्टंट करते जरूर देखा होगा, लेकिन क्या कभी किसी लड़की को 30 फीट ऊंचाई पर, 70 डिग्री की ढलान वाली दीवार पर बाइक की सीट पर खड़े होकर स्टंट करते देखा है? शायद नहीं। भोपाल उत्सव मेले में इन दिनों ऐसा ही रोमांचक नजारा देखने को मिल रहा है। जहां एक ओर लोग ऊंचे झूलों का आनंद ले रहे हैं, वहीं दूसरी ओर 'मौत का कुआं' लोगों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। यहां असम की रहने वाली अनीता चौधरी अपने अद्भुत स्टंट से दर्शकों का दिल जीत रही हैं।

लड़कों को देखकर सीखा बाइक चलाना- अनीता बताती हैं, जब मैंने लड़कों को स्टंट करते देखा, तो मुझे यह बहुत अच्छा लगा। मैंने सोचा कि अगर मैं भी ऐसा करूं, तो लोग मेरे लिए भी तालियां बजाएंगे।

पहली बार मैंने 15 साल की उम्र में बाइक चलाई। इसके बाद बंगाल के रहने वाले आकील खान ने मुझे बाइक चलाना और मौत के कुएं में स्टंट करना सिखाया।

परिवार ने किया विरोध, फिर किया सपोर्ट- अनीता कहती हैं, मेरे परिवार में मां और भाई-बहन हैं। शुरुआत में वे मेरे इस काम के खिलाफ थे। वे मुझे कई बार रोकते थे, लेकिन अब उन्हें कोई परेशानी नहीं है। वे मेरे काम से खुश हैं। हालांकि, लोग आज भी कहते हैं कि यह काम बहुत जोखिम भरा है और मुझे इसे छोड़ देना चाहिए। लेकिन मैं उनसे कहती हूं कि मुझे यह काम पसंद है, और मैं इसे जारी रखूंगी।

मन शांत रखकर करती हूं स्टंट- अनीता के मुताबिक, स्टंट करते समय कभी-कभी डर लगता है, लेकिन मैं हमेशा अपना मन शांत रखती हूं। मैंने शुरुआत यामाहा बाइक से की थी। बाद में कई तरह की बाइक्स चलाईं। फिलहाल, मैं बुलेट बाइक चला रही हूं। यह काम मैं पिछले 10-11 सालों से कर रही हूं और बुलेट बाइक चलाते हुए 8-9 साल हो गए हैं।

हैदराबाद की पब्लिक ने दिया सबसे अच्छा रिस्पॉन्स- अनीता ने बताया, मैंने कई शहरों में अपनी कला का प्रदर्शन किया है, लेकिन हैदराबाद में मुझे सबसे अच्छा रिस्पॉन्स मिला। इससे पहले भी कई लड़कियों ने मौत के कुएं में बाइक चलाई है। मैंने खुद बंगाल और बिहार की कुछ लड़कियों के साथ काम किया है।

संपादकीय

संसद : घटती कार्य उत्पादकता

शीतकालीन सत्र में संसद के दोनों सदनों लोकसभा व राज्य सभा में विपक्ष के भारी हंगामे के बाद सदन की कार्यवाही अनिश्चितकालीन समय के लिए स्थगित करने से संसद की कार्य उत्पादकता पर फिर से प्रश्नचिन्ह लग गया है। क्योंकि संसद के हर सत्र पर होने वाला करोड़ों रू. का खर्च, जनता से जुड़े मुद्दों पर गंभीर बहस और जन भावना को सदन में प्रतिबिम्बित करने के बजाए वहां बैठे जन प्रतिनिधि केवल हंगामा करने और विवादास्पद टिप्पणियों और हरकतों को ही संसदीय आचरण समझ बैठे हैं। यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण और मतदाताओं से बेवफाई है। कुछ लोगों को आशंका है कि संसद की कार्य उत्पादकता का लगातार कम होना संसदीय प्रणाली को विफल कराने की साजिश तो नहीं है। संसद के शीतकालीन सत्र में 'एक देश, एक जनादेश' जैसा महत्वपूर्ण विधेयक जरूर लोकसभा में प्रस्तुत हुआ, लेकिन ज्यादातर समय हंगामे में ही गुजरा। खास कर संविधान पर चर्चा अंततः सभी राजनीतिक दलों में अंबेडकर भक्ति की होड़ और एक-दूसरे को दोषी ठहराने की अराजकता में बदलती दिखी। इसकी तुलना में मप्र विधानसभा की तारीफ करनी होगी, जहां विपक्ष के हंगामे के बाद भी सदन ने अपना शीतकालीन सत्र पूरा किया। मुद्दा यह है कि विधान मंडलों में अब विपक्ष और सत्तापक्ष की दिलचस्पी केवल हंगामे और किसी भी तरह से काम निपटाने तक क्यों रह गई है? बेशक लोकतंत्र में विपक्ष को अपनी बात कहने का पूरा हक है, लेकिन क्या इससे सदन में काम काज के समय को मार कर किया जाना चाहिए? अगर देश की सबसे बड़ी पंचायत लोकसभा और राज्यसभा की बात करें तो वहां सत्र के अंतिम दिन कोई भी काम काज नहीं हुआ। पूरा समय विपक्ष और सत्तापक्ष के घमासान में बीत गया। संविधान निर्माता डॉ. बाबा साहब अंबेडकर पर केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह की कथित अपमानजनक टिप्पणी के विरोध में कांग्रेस ने जिस तरह से हंगामा किया, उसका मकसद इस प्रकरण से राजनीतिक लाभ लेना था। लेकिन सवाल यह है कि क्या कांग्रेस को सचमुच इससे कोई सियासी लाभ मिल सकता है? दूसरे, कांग्रेस के प्रदर्शन के दौरान सांसदों के बीच जो धक्का-मुक्की हुई, वह संसद की पवित्रता पर कलंक है। इस घटना के बाद संसद के मकर द्वार पर किसी भी तरह के प्रदर्शन पर हमेशा के लिए रोक लगा दी गई। इससे भी ज्यादा गंभीर बात तो संसद में वन नेशन, वन इलेक्शन' बिल पेश होते समय व्हिप जारी होने के बाद भी सत्तारूढ़ भाजपा के 20 सदस्यों का गैरहाजिर रहना है। यह सांसदों के संसदीय कार्य के प्रति गंभीरता और प्रतिबद्धता को दर्शाता है। संसद के 20 दिनों के इस सत्र में लोकसभा में कामकाज की उत्पादकता 57.87 प्रतिशत रही। लोकसभा इन 20 दिनों में चार विधेयक ही पारित कर पाई। राज्यसभा में तो 40.03 प्रतिशत ही कामकाज हो सका और पूरे सत्र में मात्र दो विधेयक पारित हुए। तो क्या ऐसे ही चलेगा हमारा संसदीय लोकतंत्र? क्या इसीलिए छह महीने पहले देश की 140 करोड़ जनता ने 543 प्रतिनिधियों को निर्वाचित करके भेजा था? हम 2047 तक भारत को विकसित बनाने की बात कर रहे हैं लेकिन संसद का महत्वपूर्ण समय और देश का कीमती धन बर्बाद कर रहे हैं? संसद के सत्र के दौरान भले सत्ता पक्ष और विपक्ष के अपने-अपने राजनीतिक हित सध गये हों लेकिन देश की जनता का और संसद की छवि को तो नुकसान हो गया है। आखिर कैसे होगी इसकी भरपाई? अगर संसद इतनी अगंभीरता से चली तो नागरिकों का इस व्यवस्था में विश्वास घटने लगेगा, जोकि हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए बहुत घातक होगा।

नजरिया

रघु ठाकुर

लेखक समाजवादी चिंतक हैं।

एक देश एक चुनाव- कुछ जरूरी सुझाव

भारत सरकार अब एक देश एक चुनाव के कानून बनाने के लिए लगभग तैयार दिखती है। सरकार ने संसद के इस सत्र में बिल पेश कर दिया है और जेपीसी के गठन की घोषणा कर दी गई है। श्री रामनाथ कोविंद कमेटी ने भी अपनी सिफारिशें सरकार को सौंप दी है। हालांकि सरकार द्वारा बनाई गई ऐसी समितियां सरकारों के लक्ष्य का मार्ग प्रशस्त करने का ही माध्यम होती है। लोकतांत्रिक समाजवादी पार्टी और व्यक्तिगत तौर पर मैं तो चुनाव सुधार एवं एक देश एक चुनाव की बात को 1980 से ही उठाता रहा हूं यहां तक कि मैंने 80 और 90 के दशक में विभिन्न राजनीतिक दलों का समर्थन भी जुटाने का प्रयास किया था। चुनाव सुधार को लेकर एक बैठक में भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष कुशाभाऊ ठाकरे शामिल हुए और उन्होंने समर्थन भी व्यक्त किया था। लगभग 90 के दशक में चुनाव सुधार को लेकर दिल्ली में भी कई आयोजन किए गये थे जिनमें पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर और वर्तमान राष्ट्रीय इंदिरा गांधी कला केंद्र के अध्यक्ष श्री राम बहादुर राय आदि शामिल हुए थे, तथा एक प्रस्ताव तैयार कर हम लोगों ने केंद्र सरकार, चुनाव आयोग और अन्य को पहुंचाया था।

श्री रामनाथ कोविंद कमेटी ने जो सिफारिशें भेजी हैं उनके साथ लिखी अपनी टिप्पणी में उन राजनीतिक दलों का जिक्र किया है। जिन्होंने इस प्रस्ताव का समर्थन किया है। अखबारों के सूचना के अनुसार एनडीए के सहयोगी राजनीतिक दलों के अलावा 34 दलों ने उनकी समिति के समक्ष समर्थन किया है। मुझे जानकारी नहीं है कि उनके 34 राजनीतिक दलों की सूची में कौन-कौन दल शामिल है। यद्यपि मैंने लोकतांत्रिक समाजवादी पार्टी की तरफसे एक देश एक चुनाव की परिकल्पना का प्रस्ताव भेजा था।

जो लोग एक देश एक चुनाव का विरोध कर रहे हैं और उसे लोकतंत्र के खिलाफबता रहे हैं यह भी गलत है और उनका विरोध भी केवल राजनीतिक है। 1967 तक देश में लोकसभा एवं विधानसभा के चुनाव एक साथ हुए हैं। 1969 में जब कांग्रेस पार्टी का बंटवारा इंडिकेट और सिंडिकेट में हुआ। एक कांग्रेस तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की कांग्रेस बनी जिसे कांग्रेस आई कहा गया। दूसरा धड़ा कांग्रेस संगठन का था जिसे कांग्रेस संगठन कहा गया, उसके बाद पहली बार देश में अलग-अलग चुनाव की प्रथा प्रारंभ हुई। सबसे पहले इंदिरा गांधी ने अपनी ही पार्टी के संसदीय बोर्ड द्वारा राष्ट्रपति पद के स्वीकृत प्रत्याशी स्वर्गीय नीलम संजीव रेड्डी के खिलाफ स्वर्गीय वीवी गिरी को गैरदलीय प्रत्याशी के रूप में खड़ा किया। जिस संसदीय बोर्ड की बैठक में नीलम संजीव रेड्डी के नाम की घोषणा हुई थी उसमें स्वयं इंदिरा गांधी मौजूद थीं, शायद बहुमत को देखकर उन्होंने कोई विरोध दर्ज नहीं कराया तथा मुक समर्थन किया, परंतु बाद में प्रधानमंत्री पद और निरंकुश सत्ता के विरुद्ध उसे समझाकर कांग्रेस में विरोध कराया और वीवी गिरी को राष्ट्रपति चुनाव लड़ा कर जिताया था।

कांग्रेस पार्टी में सत्ता के विद्रोह की यह शायद पहली शुरुआत थी और जिसे स्वतरू पार्टी के प्रधानमंत्री ने किया था। श्री वी.वी गिरी की जीत के बाद इंदिरा गांधी जी का आत्मविश्वास बढ़ा और जन समर्थन सिद्ध हुआ। संसद के बाहर 1970 में तत्कालीन संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी का जो विशाल प्रदर्शन हुआ था जिसमें पुलिस ने भारी लाठी चार्ज किया। जार्ज फर्नांडीस जो मंच पर भाषण दे रहे थे उनके सर को फोड़ा गया, राज नारायण जी को पुलिस ने मंच से नीचे गिराया था और अनेक लोग घायल हुए थे। उस समय इंदिरा गांधी का संसद में अकेले बहुमत नहीं था और स्वर्गीय मोरारजी देसाई एवं अन्य विपक्षी दलों के नेताओं ने पुलिस लाठी चार्ज में सने खून के कपड़े संसद में पेश किए थे, शायद उसी दिन श्रीमती इंदिरा गांधी की सरकार गिर जाती परंतु कम्युनिस्ट पार्टी ने उनका समर्थन किया और सरकार बचायी। इस घटना के बाद श्रीमती गांधी ने 1971 में संसद को अवधि पूर्ण होने के 1 वर्ष पूर्व भंग कर और चुनाव कराने की घोषणा की। स्वाभाविक था कि, तत्कालीन राष्ट्रपति जो श्रीमती इंदिरा गांधी के कृपा से अधिकृत कांग्रेस के प्रत्याशी को हराकर राष्ट्रपति चुने गए थे उन्होंने श्रीमती गांधी के प्रस्ताव को स्वीकार किया। इस चुनाव में श्रीमती गांधी के साथ कम्युनिस्ट पार्टी शामिल थी। श्रीमती गांधी ने गरीबी हटाओ का नारा दिया और विशाल बहुमत से चुनाव जीतकर आई और यहीं से देश में लोकसभा और विधानसभा चुनाव अलग-अलग होने की शुरुआत हुई। विधानसभाओं के चुनाव 1972 में हुए और यह क्रम आपातकाल में और बढ़ा दिया गया, जब 1976 में श्रीमती गांधी ने संसद की अवधि को 5 साल से 2 वर्ष आगे बढ़ाने का निर्णय किया। जबकि जो लोकसभा के चुनाव संविधान के तहत 5 वर्ष के अनुसार होने थे, तथा बाद में लगभग 6 वर्ष के बाद 1977 में कराए गए। 1977 के चुनाव में श्रीमती इंदिरा गांधी की हार हुई और जनता पार्टी की जीत हुई। जीत के बाद जनता पार्टी की सरकार बनी। हालांकि वह सरकार भी राजनीतिक भूल की थी और जो विधानसभाओं के चुनाव 8 या 9 महीने बाद होने थे, जिन राज्यों में कॉग्रेंस का शासन था, उन्हें समय से पूर्व भंग कर मध्यावधि चुनाव कराए।

एक देश एक चुनाव हर प्रकार से उचित है, संवैधानिक भी है और व्यावहारिक भी है। आज चुनाव बहुत खर्चीले हैं और चुनाव के खर्चे एक संसदीय क्षेत्र के लिए मीडिया से प्राप्त सूचना के अनुसार 60000 करोड़ रू. तक पहुंच जाते हैं, जो राजनीतिक दल और प्रत्याशी अपना खर्च करते हैं वह अलग है। दूसरा, बार-बार चुनाव होने से आचार संहिता लगती है और सारे सरकारी कार्य ठप हो जाते हैं। लोकसभा और विधानसभा के चुनाव एक स्थाई घटना सी बन गई है, फिर इसके बाद नगर पालिका, नगर परिषद और पंचायत आदि के चुनाव का सिलसिला लगातार चलता रहता है। इसमें हमारा प्रस्ताव वर्तमान भाजपा सरकार के प्रस्ताव से अलग है, हमने प्रस्ताव किया कि-

1. देश में दो माह 5 वर्षीय चुनाव के लिए तय किये जाएं और इनमें पंचायत से लेकर संसद तक के सारे चुनाव एक साथ हों। यह आसानी से संभव है और अगर सरकारें यह निर्णय करेंगी तो न केवल मत प्रतिशत बढ़ेगा बल्कि चुनाव में हो रही धांधलियां में भी कमी आयेगी। क्योंकि जब पंचायत के पंच तक के चुनाव साथ होंगे तो ग्रामीण अंचलों के मतदाता भी शामिल होंगे, इससे चुनाव के खर्च भी कम हो जाएंगे और बार-बार चुनाव की आचार संहिता के नाम पर समय की बर्बादी जो होती है वह भी रूक जाएगी। दलों के चुनावी खर्चे भी कम हो जाएंगे। चंदे के नाम पर होने वाला राजनीतिक भ्रष्टाचार यदि समाप्त नहीं होगा तो भी वह सिकुड़ जाएगा।

2. हमने यह भी सुझाव दिया था कि चुनाव सुधार में व्यापक दृष्टि भी रखनी चाहिए, इसमें कुछ और भी सुधार होना चाहिए जैसे कि-

क. एक व्यक्ति एक स्थान से चुनाव लड़े, यह कानून बने।

ख. जो व्यक्ति जिस पद पर निर्वाचित होता है वह 5 वर्ष की अवधि तक दूसरा चुनाव नहीं लड़ेगा।

ग. आज जो जितना बड़ा नेता होता है वह कई जगह से चुनाव लड़ता है और जीतने के बाद त्यागपत्र देकर देश पर बोझ डालता है।

घ. अगर दल बदल या मृत्यु के चलते कोई स्थान रिक्त होता है तो जिस दल का प्रत्याशी उस क्षेत्र से चुनाव जीता हो, उस दल से नाम लेकर उसे नामित किया जाए ताकि मध्यावधि चुनाव न हो।

ङ. अगर दल बदल या किन्हीं कारणों से कोई सरकार गिरती है तो सदनों को भंग करने के बजाय राष्ट्रपति या राज्यपाल विधायिका में दलीय प्रतिनिधित्व की संख्या के आधार पर राष्ट्रीय मंत्रिमंडल का गठन करें जो शेष अवधि तक काम करें।

च. समूचा चुनाव का खर्च चुनाव आयोग उठाये, प्रत्याशियों का जीवन परिचय, घोषणा पत्र, मतदाता परिचय पत्र आदि चुनाव आयोग द्वारा बंटवाया जाए एवं सार्वजनिक सभा के आयोजन भी चुनाव आयोग द्वारा हों। यदि यह होगा तो सभी दलों के नेताओं का तुलनात्मक अध्ययन का अवसर मतदाता को मिलेगा और खर्च भी रुकेगा। एक प्रत्याशी को चुनाव आयोग द्वारा दो या तीन गाड़ी दी जाए, बकाया सब बंद किया जाए।

छ. सभी राजनीतिक दलों को मीडिया, टीवी एवं अखबार पर अपनी-अपनी बात करने का चुनाव आयोग समय तय करें, ताकि कमजोर और गरीब दलों एवं प्रत्याशियों की राय भी लोगों तक पहुंच सकें। वैसे भी संविधान द्वारा दिए गए समता के अधिकार में समान चुनाव लड़ने का अधिकार होना चाहिए।

झ. ई-वोटिंग और घर पर मतदान को बढ़ावा दिया जाए इससे चुनाव भी आसान होगा और मत प्रतिशत भी बढ़ेगा।

मेरी राय में तो देश की जनमत को वास्तविक अभिव्यक्ति के लिए मौलिक संशोधन होना चाहिए कि-

देश में दलों के मत प्रतिशत के हिसाब से विधायकों में हिस्सेदारी मिले, यानि किसी राजनीतिक दल को देश में एक प्रतिशत भी मत मिलता है तो उसे अपने अनुपात में प्रतिनिधित्व मिले, यह लोकतांत्रिक भी होगा और सामूहिक अभिव्यक्ति भी होगी। परंतु वर्तमान भाजपा सरकार अपनी राजनीतिक उद्देश्य के लिए लोकसभा एवं विधानसभा चुनाव एक साथ कराना चाहती है, इससे आगे नहीं जाना चाहती है, यह निर्णय एक देश एक चुनाव के लिए अधूरा होगा।

दृष्टिकोण

चेतनादित्य आलोक

लेखक स्तंभकार हैं

एकता के अभाव में किसी भी राष्ट्र का उत्थान संदिग्ध

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह जन्म, रिश्ते और रोजगार के अतिरिक्त भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक एवं अन्य कारणों से चाहे दुनिया के किसी भी कोने में, किसी भी देश का निवासी बनकर क्यों न रहता हो, उसका अपना एक समाज, अपनी एक अलग दुनिया होती है। इसी प्रकार, अलग-अलग जगहों पर रहते हुए मनुष्य की समस्याएं, दुविधाएं, आवश्यकताएं, आकांक्षाएं और उसके पास उपलब्ध सुविधाएं भले ही अलग-अलग प्रकार की हों, परंतु एक बात सभी मनुष्यों के जीवन पर लागू होती है और वह है मानव एकता तथा एकजुटता के साथ उसका आगे बढ़ना। दरअसल, मानव जाति की एकता की जरूरत दुनिया को आरंभिक काल से ही रही है। हालांकि, मनुष्य जाति के लिए अपेक्षित एकता और एकजुटता कभी कायम नहीं हो पाई, जबकि यह सच है कि एकता और एकजुटता के अभाव में किसी भी समाज या राष्ट्र का उत्थान संदिग्ध होता है। जाहिर है कि मानव जाति की एकता और एकजुटता के साथ उसके आगे बढ़ने की इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए अपने-अपने स्तर पर दुनिया के तमाम देशों को गंभीर प्रयास करने ही होंगे। हालांकि, यह उतना भी आसान कार्य नहीं है कि सारे देश एक-दूसरे के निकट आ जाएं और दुनिया में एकता एवं एकजुटता कायम करने के लिए अपनी-अपनी नीतियों में बदलाव कर लें, लेकिन समय की मांग यही है कि गुटबाजियों को छोड़ और खेमेबंदियों को तोड़ कर हर हाल में दुनिया के सभी देश एक दूसरे के निकट आएं और साथ-साथ चलने के लिए संकल्पबद्ध हों।

यह तभी संभव होगा, जब सभी छोटे-बड़े देश अपनी जिद्द, लिप्सा, अपने मोह, लालच और संकुचित सोच को परे रख कर विश्वहित एवं मानवहित में सोचेंगे। देखा जाए तो क्षुद्र विचारों और संकुचित सोच में सिमटकर दुनिया और मानवता ने अपना बहुत नाश कराया है। इसलिए अब जरूरी है कि एकता और एकजुटता को 21वीं सदी के लिए एक आधार और प्रोत्साहन के रूप में स्वीकार करते हुए

आगे बढ़ा जाए। हालांकि यह सच है कि वैश्वीकरण ने दुनिया भर के लोगों को आगे बढ़ने और विकास करने के अनेक अवसर प्रदान किए हैं, लेकिन इस वैश्वीकरण ने दो दुनियाओं के निर्माण की पटकथा लिखी। इनमें एक दुनिया ऐसी बनी, जिसमें केवल गरीब लोग रहते हैं, जहां दुःख, संकट, परेशानियां, समस्याएं, शोषण और उत्पीड़न का साम्राज्य खूब फलता-फूलता है। वहीं, वैश्वीकरण ने इसके बिल्कुल पास ही में एक अलग दुनिया भी बनाई, जिसमें कदम-कदम पर अमीरी की दास्तानें लिखी होती है। जाहिर है कि वैश्वीकरण के कारण होने वाले विकास के लाभों और भारों का वितरण दुनिया भर के मानव समुदायों के बीच असमान रूप से हुआ। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि दुनिया भर में मनुष्यों की एक बड़ी संख्या विकास के मामले में अन्य लोगों से काफी पीछे रह गई। यह विडंबना नहीं तो और क्या है। बहरहाल, 21वीं सदी में मनुष्य की वास्तविक उन्नति और उत्थान को लेकर वैश्विक एकता और एकजुटता के लिए एक संयुक्त वैश्विक प्रयास करने की नितांत आवश्यकता है।

बता दें कि दुनिया में जहां कहीं भी जो लोग विकास की दौड़ में पीछे छूट गए हैं अथवा पीड़ित, शोषित, दुखी और परेशान हैं या कहा जाए कि व्यवस्था में जिन लोगों तक अब तक मदद सबसे कम या नहीं पहुंच पाई है, उन व्यक्तियों, समुदायों तक आज सहायता पहुंचाने की आवश्यकता है। वैसे, बेहतर तो यह होगा कि जिन्हें व्यवस्था से सबसे अधिक लाभ प्राप्त होता रहा है, वे ही उन तक सहयोग के अपने हाथ लेकर जाएं। जाहिर है कि यदि समर्थ लोग निर्धन और लाचार लोगों तक स्वयं अहयोग का हाथ लेकर जाएंगे तो इससे दोनों ही दुनियाओं के बीच आपसी प्रेम और सद्भाव तो बढ़ेगा ही, साथ ही, इससे साझी जिम्मेदारी की संस्कृति भी विकसित होगी और दुनिया में एकता और एकजुटता के कायम होने में आसानी भी होगी। देखा जाए तो एकता और एकजुटता के विराट महत्व को आत्मसात करते हुए हमारे पूर्वज ऋषि-मुनियों ने इसे बहुत महत्व दिया था। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति में आरंभ से ही एकता और एकजुटता महान मानवीय गुण माने जाते रहे हैं। हालांकि, इसके लिए प्रमाण की जरूरत नहीं, फिर भी यदि दुनिया के इतिहास को उठाकर देखा जाए तो पता चलता है कि दुनिया में आज तक सभी महान कार्य मानव जाति की एकता एवं सहयोग से ही संभव हो पाए हैं। तात्पर्य यह कि महान एवं बड़े कार्यों को पूरा करने हेतु दुनिया में मानवीय एकता का होना परम आवश्यक है।

साथ ही, विभिन्न समस्याओं यथा- भुखमरी, निर्धनता, अशिक्षा, आतंकवाद, उग्रवाद, हिंसा, लूट, भ्रष्टाचार एवं अन्य तमाम समस्याओ का निराकरण भी एकल नहीं, बल्कि सामूहिक प्रयासों से ही सफलतापूर्वक किया जा सकता है। इतना ही नहीं, विश्व भर में समावेशी विकास को अंजाम तक पहुंचाने, अनेकता में एकता के जीवन मूल्य को चरितार्थ करने, सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने एवं एकता के महत्व को प्राप्त करने हेतु भी अंतर्राष्ट्रीय मानव एकता महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त अंतरराष्ट्रीय संबंधों के मामले में भी एकता को महत्वपूर्ण मूल्य के रूप में परिभाषित किया जा चुका है। जाहिर है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मानवीय एकजुटता के आयोजन और प्रदर्शन से विविधता में एकता को बढ़ावा और इसकी उपयोगिता को सम्मान होगा। वैसे, देखा जाए तो एकजुटता का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना भी है कि न्याय के लिए परस्पर एक दूसरे की देखभाल और चिंता की जाए। मनुष्य के लिए आपस में एकजुटता प्रदर्शित करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि परस्पर एक दूसरे का सम्मान किया जाए और एक दूसरे की जरूरतों और परिस्थितियों से संबंधित बेहतर समझ पैदा की जाए। गौरतलब है कि परस्पर एक दूसरे से जुड़ी हमारी यह विस्तृत दुनिया एकत्व के भाव के साथ एक-दूसरे को ऊपर उठाने एवं मनुष्य की व्यक्तिगत सफलता को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ पूरे मानव समाज की समृद्धि के लिए समग्र रूप से प्रतिबद्धता पर निर्भर करती है। तात्पर्य यह कि जब हम एक-दूसरे के लिए सहयोग का हाथ बढ़ाते हैं अथवा दुःख-दर्द और लाचारी में एक-दूसरे का हाथ थामते हैं, तो ऐसा करके केवल एक-दूसरे के प्रति सहयोग का भाव ही नहीं प्रकट कर रहे होते, बल्कि एकता और एकजुटता को कायम करने के संकल्प की सिद्धि भी कर रहे होते हैं। इतना ही नहीं, एक-दूसरे के लिए सहयोग का हाथ बढ़ाकर या आवश्यकता पड़ने पर एक-दूसरे का हाथ थामकर हम एकत्व की पवित्र और विराट भावना को सम्मानित भी कर रहे होते हैं तथा मनुष्य जाति के लिए अधिक बेहतर और निष्पक्ष भविष्य की दिशा में प्रगति भी कर रहे होते हैं।

(इतिश्री)

केवल तीन मिनट !

कटाक्ष

सुधीर देशपांडे

लेखक व्यंग्यकार हैं।

आग्रह हुआ, आप तीन मिनट ही बोलिए। वैसे कहा तो संक्षिप्त वक्तव्य देने के लिए ही था। जहां, लोगों को एक मिनट भी बोलना मुहाल है। वहां तीन मिनट का समय कम नहीं है। पर जो अपने मन में इससे अधिक बोलने की चाहत लिए मंच पर चढ़े, आप उसे संक्षिप्त उद्बोधन देने के लिए कह दें। यह कोई न्याय नहीं है। आपके पहले वाला खूब बोल चुका हो, पीछे वाला अपने हथियार पजा रहा हो। संचालक द्वारा आपके वक्तव्य के समय को सीमित कर देना वक्ता को घोर साजिश लगने लगती है। वैसे इस समय इन तीन मिनटों का मोल कम नहीं होता। भले ही आप के मन में एक कसक तो रह ही जाती हो। पर सच्चे वक्ता के लिए इन तीन मिनटों का अर्थ वहीं होता है, जो दो शब्दों में अपनी बात रखने का होता है। तीन मिनट कहने से आपका मन दुखी होता है कि उसे नहीं रोका और जनाब हमसे उम्मीद पाले बैठे हैं कि हम कम बोलें। ये घटना तब और बड़ी लगने लगती है, जब आप किसी और को सुनते सुनते पक चुके हों। आपकी और अधिक सुनने की ताकत जवाब दे चुकी हो। लोग मुख्य वक्ता को सुनने के लिए बेचैन हैं। मंच पर बैठा हर व्यक्ति किसी न किसी रूप में वक्ता ही होता है। फिर वह अध्यक्ष, सभापति, मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि या अतिविशिष्ट अतिथि, संचालक ही क्यों न हो। मंच पर बैठे दूसरे वक्ता अपनी पारी का इंतजार कर रहे होते है। एक अपना वक्तव्य खत्म करता है तो बाकी एक लम्बी सांस लेते हैं, चलो निपटा। वे यही कामना करते हैं कि यह वक्ता अपनी वाणी को विराम दे तो मैं अपनी बात शुरु करूँ। वैसे सभी ऐसे नहीं होते। वे गाहे गाहे अपनी बात घुमा फिरा कर अपने तय समय पर ही खत्म करते हैं।

मुझे अच्छा लगता है, जब आपको तीन मिनट ही बोलने को दिए जाएँ और आप उस समय सीमा भूल कर अपने उद्बोधन को, मतलब, जैसा कि, याने कि जैसा कि मैंने पहले कहा था, सुनिश्चित करना होगा, करेंगे, मेरे पूर्व श्रोता ने कहा था के साथ लंबा खींचते हैं।

आप का ध्यान श्रोताओं पर नहीं है। पर संचालक सब देख रहा होता है। डायस जानबूझकर वहीं रखा जाता है, जहां संचालक को बैठना होता है। या कि वह उसी तरफ बैठता है जहाँ डायस होता है। ताकि वक्ता के कुर्ते की पहुँच उस तक आसानी से हो जाए। और वह उसे बाजरूरत खींचकर बताता रहे कि आपका समय हुआ। चूंकि आप मंच पर होते हों। सच्चा

वक्ता वही है, जो इन सबसे अपने आपको निर्लिप्त रखे।

यह निर्लिप्तता उसके भविष्य के लिए आवश्यक है। वह यदि तर्क संगत न भी बोल रहा हो तो भी भविष्य के वक्ता के रूप में उसका मार्ग निश्चित हो जाता है। इधर श्रोताओं में कुछ हैं जिनकी उत्सुकता आपमें नहीं है। वे कुछ देर आपको सहन करते हैं। वे तालियां बजाते हैं। आपको अपना भाषण प्रभावी जान पड़ता है। वे उत्साह से भर जाते हैं और अपने समय को ताक पर रखकर अपने पुराने अनुभवों का पिटारा खोल देते हैं। कार्यक्रम के संयोजक, संचालक, अतिथि, मुख्य वक्ता अपना सिर धुनते रहें तो रहें। हमें क्या?

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

डॉ. प्रेमचंद द्वितीय

लेखक व्यंग्यकार हैं।

एक कुर्सी और पास में लगती जाएगी

एक माननीय ने चुनाव के दौरान बुजुर्गों की देखभाल करने का वादा किया था। जब चुन लिए गए तो वादा निभाने के उपक्रम में उन्होंने एक सार्वजनिक स्थल पर बैंच और कुर्सियां लगवा दी इन कुर्सियों को जब उम्र दराजों, पेंशनरों, बुजुर्गों, सीनियर सिटीजनों के लिए फिक्स करवाई तब वे बोले थे उन्हें कुर्सी का कोई मोह नहीं है, यह कुर्सी सेवा की है। हालांकि उनका मोह उसी दिन प्रकट हो गया था जब कुर्सियों के पीछे उन्होंने अपना नाम लिखवा दिया था और अपने उम्र दराज समर्थक को रोज कुर्सी के पीछे लिखे नाम को नमन करने का नाटक करवाया, जिसके कारण जो भी बुजुर्ग इस पर बैठता बैठने के पहले कुर्सी पर लिखे नाम को स्मरण करते हुए नमन करता।

खैर, जब माननीय द्वारा प्रदत्त कुर्सी पर बुजुर्ग इकट्ठा होते तो रोज बहस लोकल लेवल से लेकर वोकल लेवल तक की होती । इन कुर्सियों पर रिटायर्ड अधिकारियों से लेकर मोहल्ले के चुनाव में बुजुर्गों से आशीर्वाद की चाहत से जितने की उम्मीद वाले, कुछ अधेड़, युवा भी बैठते और चर्चा में भाग लेते।

आज भी वैसा ही हुआ पं शिवनारायण जी बोले यह तो कुर्सी की कृपा है कि हम इन पर बैठकर मुद्दों पर चर्चा कर रहे हैं। कुर्सी नहीं होती तो बुढ़ापा भी बगैर कुर्सियों और बगैर बहस के निकल जाता। इसलिए कुर्सी की बलिहारी समझो कि हम सब उम्र दराजो को रोज मिलवाती है।पंडित जी के कुर्सी महात्यम को आगे बढ़ते हुए एकनाथ जी बोले आप कुर्सी की बात करते हैं तो कुर्सी बड़ी छोटी, मुख्य उप, आमने-सामने, आजू-बाजू, ऊपर नीचे होती रहती है। मुंबई में मेरे नाम वाले एकनाथ जी के पास एक जमाने में मुख्य कुर्सी थी उन्हें उप कुर्सी पर संतोष करना पड़ा।

कुर्सी महात्यम में अपनी आहुति देते हुए रिटायर्ड होने वाले प्रोफेसर लखन जी बोले मेरे अभी उम्र दराजी के फीते में कुछ इंच की दूरी है। जब सरकार मेरी उम्र दराजी को तस्दीक कर देगी तब भवन की पीओपी की तरह पी पी ओ का आर्डर मिल जाएगा तब मैं बताऊंगा कि मेरे संस्थान में एक ऐसे माननीय आए जिन्हें माननीय बनने की जिंदगी में कोई उम्मीद नहीं थी लेकिन घात भीतर घात, दल बदल, आरोप प्रत्यारोप ने उन्हें माननीय बना दिया। अब वे कुर्सी पाकर अपने इष्ट मित्रों और समर्थकों को कार्यक्रमों में ले जाते। जहां भी वे जाते भाई बंधो के अलावा जाजम बिछाने वालों से लेकर माइक पर गुनानुवाद करने वाले, हर कार्यक्रम में फोटो खींचने वाले, सेल्फी लेकर उन्हें सेल्फ स्टार्ट बनाने वाले साथ रहते थे।

कार्यक्रमों में माननीय की कुर्सी लगती लेकिन उनके साथ आए उनके फॉलोअर ,जयकारा लगाने वालों की कुर्सी नहीं लगने पर कार्यक्रम के सूत्रधार को बोलते उन्हें भी मंच पर बुला लो। एक दो कुर्सी को और लगाओ कुछ देर बाद उनके चुनाव में तरह-तरह की मदद करने वाले और कुनबे के भी आ टपकते। फिर सूत्रधार से कहते तीन चार कुर्सियां और बुला लो, इस तरह आठ दस अतिरिक्त कुर्सियों के कारण मंच रंगमंच हो जाता। सूत्रधार पसोपेश में इसलिए थे कि वे कुछ के नाम जानते थे, कुछ के कारनामें, कुछ के भविष्य की नेतागिरी के जलवे... इसके बाद आदेश हुआ कि सभी को संबोधित भी कराना है। अब सूत्रधार के माथे पर पसीना आ गया वे नाम नहीं जानते थे ।वह इस पर उनके एक मित्र ने कान में आकर आईडिया दिया कि वह कुर्सी को क्रम से लेकर कुर्सी नंबर तीन पर बैठे , फिर कुर्सी नंबर चार पर बैठे अतिथि महोदय को कुर्सी नंबर से बुला ले। इस तरह बुलाई गई सभी कुर्सियां मंच पर अपने भाषणों से चहचहा उठी। औपचारिक आभार मानने के बाद अनौपचारिक रूप से बोले यह समारोह तो एक कुर्सी और... एक कुर्सी और ...हो गया ! इस तरह को कुर्सियों पर बैठे बुजुर्ग कुर्सियां छोड़ छोड़ कर जाने लगे और जाते जाते कहते जा रहे थे की उम्र दराजों की संख्या बढ़ती जाएगी , वैसे वैसे एक कुर्सी और..., एक कुर्सी और... पास में लगती जाएगी।

विचार

विवेक कुमार मिश्र

लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

एक कड़क शिक्षक की तरह दिसंबर

दिसंबर का अपना अलग ही मिजाज होता है । बहुत धीरे धीरे आता है और एक दिन पता चलता है कि दिसंबर आ गया। यह जो दिसंबर है वह आता तो धीरे-धीरे पर जाता इतनी तेजी से है कि उसे कोई देख ही नहीं पाता। दिसंबर को जाते हुए देखना जहां एक तरफ सुकून देता है वहीं यह भी कहता चलता है कि जल्दी जल्दी अपने को समेट लो अपनी दुनिया को जतन करों। दिसंबर बहुत कुछ कहते हुए चलता है कि चलों पर आगे पीछे देखकर चलों, दुनिया की गति में अपनी गति को जोड़ते हुए आगे बढ़ों जो कुछ तुम्हारा लक्ष्य इस दिसंबर तक रहा वह पूरा हुआ कि नहीं यदि नहीं हुआ तो कहां कमी रह गई थी या तुम चुक गये तो अब आगे से मत चुकना, अपनी गति बराबर से बनाते हुए चलना पड़ता है तब जाकर आदमी अपनी जगह पर पहुंचता है। जिसे जहां भी जाना है वह जाता है पर दिसंबर एक पाठ पढ़ाते हुए जाता है कि तुम क्या कर रहे हों और कहां ठीक से काम नहीं कर रहे हों यदि कार्य का अंबार लगा है तो तय मानिए कि यह कार्य की अधिकता नहीं है बल्कि आप अपना कार्य ठीक से नहीं कर रहे हैं और दिसंबर बराबर से यहीं कहते चलता है कि आप समय से समय बद्ध होकर कार्य करते रहे। कोई भी कार्य बड़ा छोटा नहीं होता जो आपका दायित्व है उसे निभाते चलें सब ठीक हो जाएगा। दुनिया की गति में दिसंबर की अपनी ही गति और पहचान है। जो कुछ है जैसे भी है उसे दिसंबर में ही पूरा करना है। दिसंबर एक तरह से टारगेट दे देता है कि आप यह करें तो यह करें। दिसंबर हाथ पर हाथ धरे रहने के लिए या बैठ जाने के लिए या छुट्टियों में घूमने भर के लिए नहीं होता बल्कि वह आपको अपने कार्य का मूल्यांकन करने अपनी आदतों में सुधार करने और आगे नये संदर्भ में आप क्या करेंगे उन सबका लेखा जोखा रखने के समय का हिसाब बनाने को छोड़ता है। दिसंबर दुनिया की गति में अपनी गति को रेखांकित करता चलता है कि हां हम यहां हैं और यहां से इस तरह वहां तक जायेंगे। एक उम्मीद का रास्ता दिख जाता है। एक बदलते हुए वर्ष की शुरुआत करने को कहते चलता है कि अब इस तरह चलें और बस चलते रहे हां सही ढ़ंग से चलते रहें। दिसंबर का पाठ सभी को पढ़ते रहना चाहिए। दुनिया जैसी है और जिस तरह से है उसमें आप क्या कर सकते हैं या क्या नहीं करेंगे। जब हम सब अपने कार्य को जान जाते हैं तो कुछ भी मुश्किल नहीं होता है । आदमी को यह जानना जरूरी होता है कि क्या करना है और क्या कर रहे हैं। जब आदमी सही ढंग से चलता है तो कुछ भी कठिन नहीं होता, हर मुश्किल कार्य आसान हो जाता है। दिसंबर बहुत तेजी से अपने कार्य को करने के लिए कहते चलता है।

दिसंबर धूप छांही के रंग में खिला खिला होता है। कहते हैं कि दिसंबर तो दिसंबर के रंग में ही रंगा होता है। दिसंबर का हर दिन बहुत कुछ करने को कहता चलता है कि ये कर लें तो वो कर लें, कुछ भी छुट न जाएं जो कुछ करना है वह इसी महीने में कर लिया जाए। यदि कुछ रह गया तो वह अगली तारीखों में जायेगा अगले वर्ष में जायेगा। पूरे साल भर का लेखा-जोखा, मूल्यांकन दिसंबर कराता है। यह देखना होता है कि हम क्या लेकर चले थे, क्या कुछ करने की तय कर चलें थे और यदि नहीं कर पाया तो कारण क्या था, क्या हम केवल सोचते हैं या वास्तव में कुछ करते भी हैं यह सब सोचने समझने के लिए दिसंबर बाध्य कर देता है। हर बात को, हर संदर्भ को जब आदमी टालता है तो तो वह कुछ कर नहीं पाता और दिसंबर सबसे कठिन सा हो जाता है कि आदमी ने अपना किसी तरह का कोई लक्ष्य पूरा नहीं कर पाया और इस तरह के आदमी अक्सर अपनी असफलताओं की कहानी दूसरों के सिर पर फोड़ने में माहिर होते हैं। वहीं यह भी देखने में आता है कि बहुत सारे लोग ऐसे होते हैं जो आराम से दिसंबर में अपने लक्ष्य को पूरा होते देखते हैं या लक्ष्य के करीब होते हैं और दिसंबर के जाते जाते उनका कार्य पूरा हो जाता है। ये लोग सफलता को अपनी जीवनशैली बना लेते हैं और हर साल अपने एक लक्ष्य को लेकर चलते हैं और उसे पूरा भी करते हैं। इस तरह जीवन को जीते हैं कि जीवन की सफलता और सार्थकता साफ-साफ दिखाई देता है। दिसंबर के पाठ को याद रखने के लिए कुछ बिंदु यों तैयार किया जा सकता है -

1. दिसंबर कार्य का मूल्यांकन करने को कहता है।
2. कार्य व्यवहार और कार्य विभाजन को सही ढ़ंग से पूरा करते हुए चलने को कहता है।
3. दिसंबर कहता है कि एक बार ठहर कर देखों कि तुम कहां हो और कहां तक जाना है, फिर तुम अपने रास्ते पर चलते चलों।
4. दिसंबर आपको कठोर परिश्रमी बनाता है और हर तरह के बहाने से मुक्त होने को कहता है।
5. दिसंबर एक तरह से समय की स्थिति को रेखांकित करते चलता है कि यदि आज और अभी ये कार्य नहीं हुए तो फिर कब होंगे और यह वर्ष छुट जायेगा फिर जो कुछ भी होगा वह एक नये संदर्भ और नयी स्थिति में होगा।
6. वर्ष भर के कार्यों का लेखा-जोखा करने को कहता है।
7. दिसंबर अगले वर्ष के लिए प्लान बनाने को कहता है कि इस तरह चलें तो कार्य पूरा हो जाएगा।
8. दिसंबर का माह चलते चलते एक बड़ा लक्ष्य दे जाता है।
9. दिसंबर बराबर से यह कहते चलता है कि समय समय पर अपना मूल्यांकन करते चलें। आपके कार्य को करने कोई और नहीं आयेगा फिर किस पर अपना कार्य छोड़ या टाल रहे हैं ।

दिसंबर में हर आदमी एक लक्ष्य को लेकर चलता है कि यह करना है। एक-एक क्षण महत्वपूर्ण होता जाता है और हर कार्य को एक उपलब्धि की तरह लिया जाता है कि यह हो गया है और यह बाकी है जो बाकी रह गया उसे भी पूरा किया जाना है । इस तरह दिसंबर का महीना पूरी तरह से कार्यशैली में ही परिवर्तन ला देता है कि आप को सारे कार्य बहुत तेजी से करने हैं। जल्दी-जल्दी करने हैं, ताकि सोचा हुआ कार्य बाकी न रह जाए।

दिसंबर के दिन छोटे होते हैं। धूप, धूप की तरह नहीं होती, मौसम में गर्माहट नहीं होती, सब तरफ से एक ठंडापन भागा दौड़ा चला आता है। ऐसे में दिसंबर के साथ जब बातें करते हैं तो दांत किटकिटाते से लगते हैं, हवाएं तीखी-तीखी चलती हैं और ठंडी हवाएं ऐसे आती हैं कि जैसे कटार चल रही हों एकदम से काट डालने के लिए ही दौड़ने लगती हैं। हां दिसंबर का महीना जितना भी कठिन हो पर आपको अपनी कार्यशैली, अपनी सोच समझ और दुनिया को देखने का एक ऐसा जरिया दे जाता है कि वह बस आपका ही होता है। दिसंबर बहुत कड़ाई के साथ अपना सबक सिखाता है, लगता है कि दिसंबर एक कड़क मास्टर है जीवन जीने की कार्यशैली का, आदमी को सही ढ़ंग से चलने के लिए कहने का और बराबर से रुक कर अपने को जांचते परखते हुए देखने के लिए दिसंबर कहता चलता है। इस तरह तय है कि दिसंबर दुनिया को पाठ पढ़ाते जाता है कि जल्दी से पर ठीक से अपना पाठ पूरा कर लों।

वक्रोक्ति

सुदर्शन कुमार सोनी

लेखक व्यंग्यकार हैं।

भ्रष्टाचार की जांच: आसमां से टपके और सीधे नीचे गिरे

एक दिन रामस्वरूप का मन हो गया कि बहुत हो गया, अब वह घर मे ऐसे निठल्लू नही बैठ सकता। जो अनियमितता, भाई भतीजा वाद, सरकारी रकम की बंदरबांट, घूसखोरी, हेराफेरी व भ्रष्टाचार उसके क्षेत्र मे चल रही परियोजना मे हो रहा है, वह उसकी शिकायत कर दोषियों कटघरे मे खड़ा करवा कर ही रहेगा। उसके क्षेत्र मे चल रही 'माचल बांध परियोजना' से बड़ी संख्या मे गरीब किसान विस्थापित हो रहे थे, लेकिन उनका सर्वे सही ढंग से नही हो रहा था। खेत के खेत पुलिस बल की उपस्थिति में बलात कब्जे मे ले लिये जा रहे थे। पर उनके पुर्नव्यस्थापन व मुआवजे भुगतान की कोई समय सीमा व परिणाममूलक योजना नही बनी थी। पूछने पर अधिकारी गण गोलमोल जवाब दिया करते थे। परियोजना की योजना सब तरह से पूर्ण थी। लेकिन जिनकी भूमि के अधिग्रहण के दम पर यह मूर्तरूप लेने जा रही थी, उनके भूमिहीन व बेघर हो जाने पर उनके लिये वैकल्पिक बसाहट की योजना अपूर्ण थी! और तो और रही सही कसर उसके यहां का पटवारी पूरी कर रहा था। वह किसानों से ज्यादा ठेकेदार के हित मे काम कर रहा था। उसने एक अलग कार्यालय खोल लिया था।

रामस्वरूप के अंदर बैठा आम आदमी आज अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक हो गया था! उसने एक लम्बी चौड़ी शिकायत सीधे प्रधानमंत्री कार्यालय के नाम से लिख ली थी। शिकायत का केन्द्र बिंदु उसके हल्के का नागेश्वर पटवारी था। यह नाक मे दम किये है। किसान इसके कारण बेदम हो रहे है, लेकिन इसकी कार्यप्रणाली मे सुधार नही हो रहा है। यह दो दो माह गांव नही आता है। किसान को इसके घर में खुल गए कार्यालय जिला मुख्यालय मे जाना पड़ता है। वहां भी यह मिल जाए तो बहुत बड़ी बात है, नही तो यहां भी किसान भटकते रहते हैं। यह मांचल परियोजना की हद मे आ रहे किसानों को उनकी भूमि के बदले मिलनें वाले मुआवजे की दर और समय सीमा के बारे मे कुछ ठीक से बताता नही है। व्यवस्थापन के बारे मे पूछों तो कहता है कि उसे कुछ नही मालूम जिसको जहां जाना है जाए। कलेक्टर से तो आम आदमी की मुलाकात हो जाती है लेकिन पटवारी से होने की गारंटी नही! और पता नही क्या क्या लिखकर उसने कागज रंग दिया था, भड़ास लिखते-लिखते शिकायती आवेदन पांच पृष्ठ का हो चला था। अंत मे रामस्वरूप ने हस्ताक्षर कर इसे करीने से बंद किया, डाक टिकट लगायी और लाल डिब्बे मे संतोष परमोधर्म की भावना से डाल आया।

दो माह बाद प्रधानमंत्री कार्यालय से एक पत्र आ पंहुचा, रामस्वरूप जी गदगद। पत्र उनके आवेदन की स्वीकारोक्ति के वास्ते था। इसमे अंत मे यह लिखा था कि आपके आवेदन को उचित कार्यवाही हेतु राज्य के मुख्य सचिव को भेज दिया गया है। प्रधानमंत्री कार्यालय की चिट्ठी पढ़ रामस्वरूप का स्वरूप बदल गया था, पैर जमीं मे नही पड़ रहे थे। वह यह पत्र लेकर गांव मे निकल गया और पान की, चाय की दुकान में, चौपाल मे सब जगह इसका प्रदर्षन करता रहा कि अब देखना समझ में आयेगा लोगों को कि किसानों को शोषण उनकी उपेक्षा पटवारी क्या कोई नही कर सकता। रामस्वरूप भी कोई चीज है!

मुख्य सचिव कार्यालय से पत्र संभागीय आयुक्त को भेज दिया गया, इस ताकीद के साथ कि पन्द्रह दिवस मे इसकी जांच करवा कर आवश्यक निर्देशित कार्यवाही करें। इस आवेदन की प्रति भी रामस्वरूप को मिल गयी थी। आज बीस दिन बाद फिर उसके कदम जमीं पर नही पड़ रहे थे। वह मुख्य सचिव कार्यालय की चिट्ठी सबको दिखाते फिर रहा था। माह भर बीत गया, लेकिन कुछ हुआ नहीं? हुआ बस इतना कि आज आयुक्त कार्यालय की कलेक्टर कार्यालय को लिखी चिट्ठी की प्रतिलिपि रामस्वरूप को मिल गयी थी कि आपका आवेदन उचित कार्यवाही के लिये कलेक्टर को भेज दिया गया है। निर्देशित किया जाता है कि आप कलेक्टर कार्यालय से संपर्क करें!

रामस्वरूप का पल भर को तो माथा ठनका कि निर्देशित उसे क्यों किया जा रहा है? लेकिन उसने सोचा कि सरकारी कार्यालयों की भाषा ऐसी ही होती है और वैसे भी आयुक्त बहुत बड़ा पद होता है। न्यायालय होता है उनका, न्यायधीश आदेश की भाषा नही तो और कैसा लिखेंगे? इस तरह उसने अपने मन को तसल्ली दी।

अबकि फिर दो माह बीत गए, कुछ हुआ नही। हुआ इतना ही कि आज फिर डाक से एक पत्र रामस्वरूप के नाम से कलेक्टर कार्यालय से आया था कि आपका आवेदन आगामी कार्यवाही हेतु आपके क्षेत्र के एसडीएम को भेज दिया गया है। आपको ताकीद किया जाता है कि आप एसडीएम कार्यालय से संपर्क कर सकते हैं। अब तक कस्बे मे यह खबर पूरी तरह फैल चुकी थी कि रामस्वरूप नेपटवारी की जबरदस्त शिकायत ऊपर तक कर दी है। आयुक्त, कलेक्टर सबकी चिट्ठी पर चिट्ठी चली आ रही है। अब हो न हो नागेश्वर का बंटाधार होने ही वाला है। इसका तुंरत नतीजा यह हुआ था कि सरपंच जो कि पटवारी का खास था दोनों से उसकी दूरी खड़ी हो गयी थी। सरकार व विपक्ष के बीच की दूरी से भी अधिक। दोनों अब जब भी रामस्वरूप दिख जाये तो उसे घूर घूर कर देखते थे। पटवारी ने एक दिन किसी से इसी बीच कहा भी था कि इसको ऐसी पटकनी दूंगा कि ता उम्र याद रखेगा।

माह भर फिर बीत गया, लेकिन कुछ हुआ नही, हुआ वही कि एक आवेदन और डाक से आ गया! एसडीएम के तहसीलदार को भेजे पत्र की प्रति अवश्य उसे प्राप्त हुयी थी! इसके बाद फिर पहले की ही तरह कुछ नही हुआ, बस हुआ इतना कि फिर तहसीलदार का पत्र आया कि आपका आवेदन टप्पा तहसील कार्यालय आवश्यक जांच हेतु भेज दिया गया है! एक दिन नायब तहसीलदार का भृत्य सीधे उसके घर आ धमका और एक कागज उसे थमाया, जिसमे यह इत्तला थी कि आपका आवेदन आपके हल्के से संबंधित राजस्व निरीक्षक को आवश्यक जांच व कार्यवाही हेतु भेज दिया गया है। अब तक तो नौ माह करीब बीतने को आये थे। रामस्वरूप हताश हो गया था, लेकिन उसने जनहित के नशे में आशा नही छोड़ी थी! उसे अभी भी लग रहा था कि अब हो न हो राजस्व निरीक्षक पटवारी नागेश्वर की नाक रगड़वा देगा, तब बच्चू को समझ मे आएगा कि रामस्वरूप क्या चीज है ?

लेकिन माह भर बाद रामस्वरूप को ऐसा लगा कि वह आसमान से एकदम से जमीं पर नीचे आ गिरा है। बीच मे खजूर का पेड़ भी नही था अटकने के लिये! हुआ यह था कि आज राजस्व निरीक्षक का भेजा एक कागज एक कोटवार हाथ मे लेकर आया था। उसने उसे डरते-डरते हाथ मे लेकर पढा़ तो उसके होश फाख्ता हो गये। आवेदन राजस्व निरीक्षक की ओर से उसे ही संबोधित था। उसमे लिखा था कि आपका आवेदन जो कि नायब तहसीलदार कार्यालय से प्राप्त हुआ था को विचारोपरान्त पटवारी हल्का नम्बर 47 नागेश्वर को जांच हेतु दे दिया गया है! उसे निर्देशितकिया गया है कि शिकायत की जांच से आपको पन्द्रह दिन के अंदर अवगत कराए। इस पत्र की प्रति उसके अलावा नायब तहसीलदार को थी!

अब रामस्वरूप की जान हलक मे अटक गयी थी कि जिसकी उसने प्रधानमंत्री कार्यालय तक सीधे शिकायत की है वही अपनी शिकायत की जांच कर प्रतिवेदन देगा। अब जब पटवारी से कभी उसका आमना सामना होता था तो पटवारी छप्पन इंच का सीना तानकर मुस्कराते हुये चलता था उस समय रामस्वरूप की हालत भीगी बिल्ली की तरह हो जाती थी!

किसान दिवस पर विशेष

रमेश सर्राफ धमोरा

लेखक पत्रकार हैं।

किसानों की बुलंद आवाज थे चौधरी चरण सिंह

चौधरी चरण सिंह का जन्म 23 दिसम्बर 1902 को गाजियाबाद जिले के नूरपुर गांव के चौधरी मीर सिंह के घर हुआ था। बाद में उनका परिवार नूरपुर से जानी खुर्द गांव आकर बस गया था। 1928 में चौधरी चरण सिंह ने आगरा विश्वविद्यालय से कानून की शिक्षा लेकर गाजियाबाद में वकालत प्रारम्भ की। 1930 में महात्मा गांधी द्वारा नमक कानून तोड़ने के समर्थन में चरण सिंह ने हिण्डन नदी पर नमक बनाया जिस पर उन्हे 6 माह जेल की सजा हुई। 1940 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में भी चरण सिंह गिरफ्तार किये गये। 1942 में अगस्त क्रांति के माहौल में चरण सिंह को गिरफ्तार कर डेढ़ वर्ष की सजा हुई। जेल में ही चौधरी चरण सिंह की लिखित पुस्तक शिष्टाचार भारतीय समाज में शिष्टाचार के नियमों का एक बहुमूल्य दस्तावेज है।

देश के पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह एक व्यक्ति नहीं विचारधारा थे। चौधरी चरण सिंह ने हमेशा यह साबित करने की कोशिश की थी कि किसानों को खुशहाल किए बिना देश का विकास नहीं हो सकता। उनकी नीति किसानों व गरीबों के जीवन स्तर को ऊपर उठाने की थी। वो कहते थे कि देश की समृद्धि का रास्ता गांवों के खेतों और खलिहानों से होकर गुजरता है। उन का कहना था कि भ्रष्टाचार की कोई सीमा नहीं है। जिस देश के लोग भ्रष्ट होंगे वो देश कभी तरक्की नहीं कर सकता।

चौधरी चरण सिंह का जन्म 23 दिसम्बर 1902 को गाजियाबाद जिले के नूरपुर गांव के चौधरी मीर सिंह के घर हुआ था। बाद में उनका परिवार नूरपुर से जानी खुर्द गांव आकर बस गया था। 1928 में चौधरी चरण सिंह ने आगरा विश्वविद्यालय से कानून की शिक्षा लेकर गाजियाबाद में वकालत प्रारम्भ की। 1930 में महात्मा गांधी द्वारा नमक कानून तोड़ने के समर्थन में चरण सिंह ने हिण्डन नदी पर नमक बनाया जिस पर उन्हे 6 माह जेल की सजा हुई। 1940 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में भी चरण सिंह गिरफ्तार किये गये। 1942 में अगस्त क्रांति के माहौल में चरण सिंह को गिरफ्तार कर डेढ़ वर्ष की सजा हुई। जेल में ही चौधरी चरण सिंह की लिखित पुस्तक शिष्टाचार भारतीय समाज में शिष्टाचार के नियमों का एक बहुमूल्य दस्तावेज है।

चौधरी चरण सिंह खुद एक छोटे से गांव में एक किसान के घर जन्मे थे। बचपन से ही उन्होंने गांव के किसानों, गरीबों के दुखः दर्द को नजदीकी से देखा जाना था। इसलिये उन्हें उनकी समस्याओं का बखूबी अहसास था। उनको जब कभी कहीं मौका मिलता वे गांव के किसानों की सेवा करने से नहीं चूकते थे। उनके दिल में हमेशा गांव के किसान ही बसे रहते थे। चौधरी चरण सिंह जीवन पर्यन्त गांधी टोपी धारण कर महात्मा गांधी के सच्चे अनुयायी बने रहे।

उन्होने किसानों की खुशहाली के लिए खेती पर बल दिया था। किसानों को उनकी उपज का उचित दाम मिल सके इसके लिए भी वो बहुत गंभीर रहते थे। उनका कहना था कि भारत का सम्पूर्ण विकास तभी होगा जब किसान, मजदूर, गरीब सभी खुशहाल होंगे। चौधरी चरण सिंह की गिनती हमेशा एक ईमानदार राजनेता के तौर पर की जाती है। उन्होंने जीवन पर्यन्त किसानों की सेवा को ही अपना धर्म माना और अपने अंतिम समय तक देश के गांव में रहने वाले किसानों, गरीबों, दलितों, पीड़ितों की सेवा में ही पूरी जिंदगी गुजारी। चौधरी चरण सिंह जाति प्रथा के कट्टर खिलाफ थे।

आज देश के किसान कर्ज में डूबे हुये हैं। उनको उनकी उपज का पूरा दाम नहीं मिल पाता है। अपनी खराब आर्थिक स्थिति के चलते देश में बड़ी संख्या में किसान आत्महत्या करने को मजबूर हो रहें हैं। केन्द्र व राज्य सरकारें भी किसानों के भले की योजनायें बना पाने में नाकाम रही है। चुनाव के समय राजनीतिक पार्टियां किसानों को झांसा देकर उनके वोट बटोर लेती है। फिर किसी का ध्यान किसानों की समस्याओं के समाधान करने की तरफ नहीं जाता है। ऐसे में आज देश के किसानों को चौधरी चरणसिंह जैसे सच्चे किसान हितैषी नेता की जरूरत है। जो उनके हक में खड़ा होकर किसानों की आवाज बुलन्द कर सके व उनका वाजिब हक दिला सके। चौधरी चरण सिंह भारतीय राजनीति में एक बड़े नेता थे। मगर इंदिरा गांधी के सहयोग से कुछ समय के लिये देश के प्रधानमंत्री बन कर उन्होने देश में पहली बार कांग्रेस के खिलाफ बने एक मजबूत गठबंधन को तोड़ा था। उससे उनकी प्रतिष्ठा को भी गहरा आघात पहुंचा था।

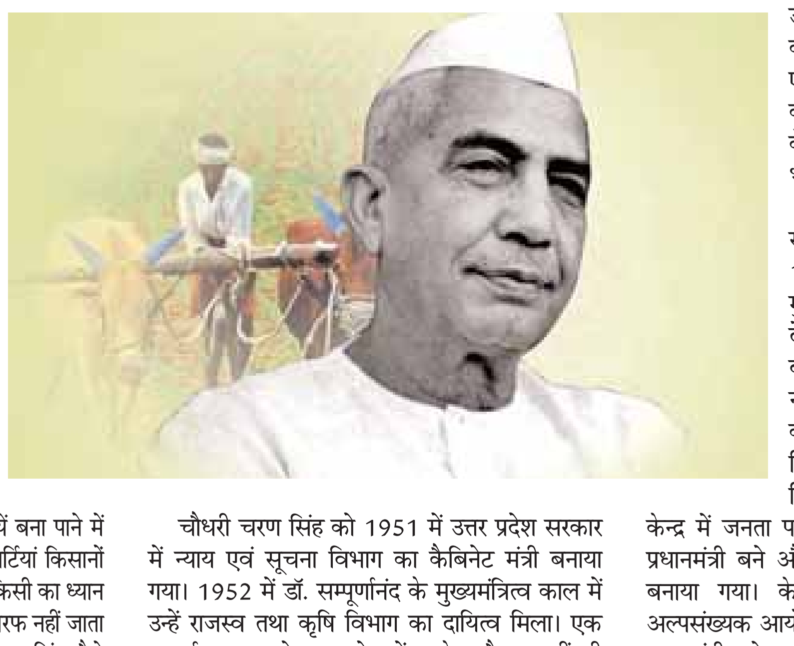

चौधरी चरण सिंह को 1951 में उत्तर प्रदेश सरकार में न्याय एवं सूचना विभाग का कैबिनेट मंत्री बनाया गया। 1952 में डॉ. सम्पूर्णानंद के मुख्यमंत्रित्व काल में उन्हें राजस्व तथा कृषि विभाग का दायित्व मिला। एक जुलाई 1952 को उत्तर प्रदेश में उनके बदौलत जमींदारी प्रथा का उन्मूलन हुआ और गरीबों को खेती करने के अधिकार मिले। 1954 में उन्होने किसानों के हित में उत्तर प्रदेश भूमि संरक्षण कानून को पारित कराया। चरण सिंह स्वभाव से भी कृषक थे तथा कृषक हितों के लिए अनवरत प्रयास करते रहे। 1960 में चंद्रभानु गुप्ता की सरकार में उन्हें गृह तथा कृषि मंत्री बनाया गया। उत्तर प्रदेश के किसान चरण सिंह को अपना रहनुमा मानते थे। उन्होंने कृषकों के कल्याण के लिए काफी कार्य किए। लोगों के लिए वो एक राजनीतिज्ञ से ज्यादा सामाजिक कार्यकर्ता थे। उनके भाषण को सुनने के लिये उनकी जनसभाओं में भारी भीड़ जुटा करती थी।

किसानों में चौधरी साहब के नाम से मशहूर चौधरी चरण सिंह 3 अप्रैल 1967 में पहली बार उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने थे। तब 1967 में पूरे देश में साम्प्रदायिक दंगे होने के बावजूद उत्तर प्रदेश में कहीं पत्ता भी नहीं हिल पाया था। 17 फरवरी 1970 को वे दूसरी बार मुख्यमंत्री बने। अपने सिद्धांतों से उन्होने कभी समझौता नहीं किया। 1977 में चुनाव के बाद जब केन्द्र में जनता पार्टी सत्ता में आई तो मोरारजी देसाई प्रधानमंत्री बने और चरण सिंह को देश का गृह मंत्री बनाया गया। केन्द्र में गृहमंत्री बनने पर उन्होंने अल्पसंख्यक आयोग की स्थापना की। 1979 में वे उप प्रधानमंत्री बने। बाद में मोरारजी देसाई और चरण सिंह के मतभेद हो गये। 28 जुलाई 1979 से 14 जनवरी 1980 तक चौधरी चरण सिंह समाजवादी पार्टियों तथा कांग्रेस के सहयोग से भारत के पांचवें प्रधानमंत्री बने।

चौधरी चरण सिंह एक कुशल लेखक भी थे। उनका अंग्रेजी भाषा पर अच्छा अधिकार था। उन्होंने कई पुस्तकों का लेखन भी किया। 29 मई 1987 को 84 वर्ष की उम्र में जब उनका देहान्त हुआ तो देश के किसानो ने सरकार में पैरवी करने वाला अपना नेता खो दिया था। लोगों का मानना था कि चरण सिंह से राजनीतिक गलतियां हो सकती हैं लेकिन चारित्रिक रूप से उन्होंने कभी कोई गलती नहीं की। इतिहास में उनका नाम प्रधानमंत्री से ज्यादा एक किसान नेता के रूप में जाना जाता है। चौधरी चरण सिंह ने ही भ्रष्टाचार के खिलाफ सबसे पहले आवाज बुलन्द करते हुये आह्वान किया था कि भ्रष्टाचार का अंत ही देश को आगे ले जा सकता है।

अटल बिहारी बाजपेयी की सरकार ने 2001 में हर वर्ष 23 दिसम्बर को चौधरी चरण सिंह की जयंती को राष्ट्रीय किसान दिवस के रूप में मनाने की जो परम्परा शुरू की थी उससे जरूर उनको साल में एक दिन याद किया जाने लगा है। आज किसानो कि हालात को देखकर चौधरी चरणसिंह जैसे देश के बड़े किसान नेता की याद आना स्वाभाविक ही है। मौजूदा समय में चौधरी चरणसिंह जैसा नेता होता तो किसानो को उनका वाजिब हक मिलने से कोई नहीं रोक सकता था। चौधरी चरण सिंह जैसे किसानो के बड़े नेता द्धारा किसानो के हित में किये गये कार्यो को देखते हुये वर्षो पूर्व ही उनको भारत रत्न सम्मान मिलना चाहिये था। मगर सरकारों की अनदेखी के चलते उनको वर्षों तक उचित सम्मान नहीं मिल पाया। नरेन्द्र मोदी सरकार ने चौधरी चरण सिंह जैसे सच्चे बड़े व सच्चें किसान नेता को भारत रत्न प्रदान कर सच्ची श्रृद्धांजलि अर्पित की है। इससे देश के करोड़ों किसानों के साथ ही सरकार का भी सम्मान बढ़ा है।

प्रदेश में मिलेट्स उत्पादन को किया जाए प्रोत्साहित : मुख्यमंत्री

कृषि विशेषज्ञों के साथ मिलकर बनायें कार्ययोजना

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की मंशा के अनुरूप प्रदेश में मोटे अनाज अर्थात् मिलेट्स के उत्पादन को प्रोत्साहित करने के लिए कृषि विशेषज्ञ और विभागीय अधिकारियों की समिति बनाकर कार्य-योजना विकसित की जाए। समिति में कृषक प्रतिनिधियों को भी अनिवार्यतः शामिल किया जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने यह निर्देश मुख्यमंत्री निवास स्थित समत्व भवन में रविवार को कृषि विभाग की समीक्षा बैठक के दौरान दिए।

कृषकों की आय में होगी वृद्धि- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मोटे अनाजों के उत्पादन से फसल लेने की लागत में कमी आएगी और कृषकों की आय में वृद्धि होगी। यह पहल किसानों के सामाजिक आर्थिक स्तर में सुधार लाने और खेती को लाभ के व्यवसाय के रूप में स्थापित करने में सहायक होगी।

उत्पादन बढ़ाने कृषकों का करें सहयोग- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में तिलहन और दालों के उत्पादन को बढ़ाने के लिए भी कृषकों को प्रेरित किया जाए। इसके लिए कृषकों को नवीन कृषि तकनीक, उन्नत बीज, उपयुक्त उर्वरक और कीटनाशक के संबंध में मार्गदर्शन उपलब्ध कराया जाए। बैठक में जानकारी दी गई की प्रदेश में धान का क्षेत्राच्छादन साधन 36 लाख 33 हजार हेक्टर क्षेत्र में है और उपार्जन के लिए 7 लाख 76 हजार किसान पंजीकृत हैं। बैठक में मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन, अपर मुख्य सचिव डॉ. राजेश राजौरा सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

राजगढ़ में नवविवाहिता ने खेत में फांसी लगाई

शादी के बाद से मायके में रह रही थी, ससुराल और मायके पक्ष से पूछताछ जारी

राजगढ़ (नप्र)। राजगढ़ जिले के भोजपुर थाना क्षेत्र के बेदर गांव में 19 वर्षीय एक नवविवाहित महिला रेखा बाई ने खेत की मेड़ पर लगे पेड़ पर फांसी लगा ली। रविवार को तहसीलदार, एसडीओपी और पुलिस की मौजूदगी में उसके शव का पोस्टमार्टम खिलचीपुर अस्पताल में किया गया ।

थाना प्रभारी रजनीश सिरोठिया ने बताया कि मृतिका के परिजनों का कहना है कि रेखा बाई की शादी कुछ समय पहले राजस्थान के जामन्या गांव में हुई थी। हालांकि, शादी के बाद से महिला को ससुराल नहीं भेजा गया था और वह अपने मायके में ही रह रही थी। शनिवार की रात को रेखा बाई घरवालों से खेत पर जाने की बात कहकर निकली थी। जब देर रात तक वह घर नहीं लौटी, तो परिजनों ने उसे ढूंढना शुरू किया। तलाश के दौरान उसका शव खेत में एक पेड़ से लटका हुआ मिला।

घटना की सूचना भोजपुर थाने में दी गई। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शव को कब्जे में लिया और जांच के बाद खिलचीपुर अस्पताल भिजवाया। रविवार को तहसीलदार, एसडीओपी आनंद राय, पुलिस, मृतिका के परिजन और ससुराल पक्ष की मौजूदगी में शव का पोस्टमार्टम किया गया। पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और मृतिका के मायके और ससुराल पक्ष से पूछताछ कर रही है। घटना के कारणों का पता लगाने के लिए जांच जारी है।

टीकमगढ़ में किसान ने खेत पर लगाई फांसी

जमीन के विवाद को लेकर था परेशान, पुलिस को तलाशी के दौरान मिला सुसाइड नोट

टीकमगढ़ (नप्र)। टीकमगढ़ जिले की मोहनगढ़ तहसील की ग्राम पंचायत केशवगढ़ में रविवार को एक किसान ने खेत पर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। परिजनों की सूचना पर थाना पुलिस मौके पर पहुंची। मृतक के कपड़ों को तलाशी ली गई। इस दौरान पुलिस को उसके पैंट की जेब से सुसाइड नोट मिला है। पुलिस ने मृतक के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर घटना की जांच शुरू कर दी है।

केशवगढ़ पंचायत के सरपंच प्रतिनिधि पुष्पेंद्र जैन ने बताया किगांव के अखिल यादव (40) का शव आज दोपहर उनके खेत पर पेड़ से लटका मिला। परिजनों ने तुरंत घटना की जानकारी मोहनगढ़ थाना पुलिस को दी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जांच पड़ताल की। इस दौरान मृतक के कपड़ों की तलाशी ली गई। उसके पेंट की जेब से जमीन के कागजात और सुसाइड नोट मिला है। जिसमें मृतक ने गांव के कुछ लोगों पर जान से मारने की धमकी देने का आरोप लगाया है। पुलिस ने पंचनामा की कार्रवाई के बाद मृतक के शव को अस्पताल भेजा। मर्ग कायम कर घटना की जांच शुरू की गई है। फिलहाल परिजनों से घटना के बारे में पूछताछ चल रही है।

जमीनी विवाद को लेकर था परेशान- मृतक के परिवार वालों का कहना है कि 40 डिसमिल जमीन को लेकर कुछ दिनों से विवाद चल रहा था। इसी बात को लेकर अखिल परेशान था। जमीन के विवाद को लेकर अखिल ने जतारा एसडीएम दफ्तर में अपील की थी। मोहनगढ़ थाना प्रभारी ब्रजेंद्र घोष ने बताया कि मृतक के पास से सुसाइड नोट मिला है। जिसमें कुछ लोगों पर धमकी देने के आरोप लगाए हैं। फिलहाल मर्ग कायम कर घटना की जांच की जा रही है।

पीतांबरा माता के दर्शन करने पहुंचे मंत्री राजपूत

वन खंडेश्वर महादेव का किया जल अभिषेक ; लाइन में लगकर दर्शन किए

दतिया (नप्र)। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री गोविंद सिंह राजपूत शनिवार शाम 6 बजे पीतांबरा पीठ पहुंचे और मां बगलामुखी की पूजा अर्चना की। प्रांगण में विराजमान वन खंडेश्वर महादेव का उन्होंने जलाभिषेक भी किया।

मंत्री करीब 35 मिनट तक मंदिर में रहे मंत्री राजपूत ग्वालियर से सड़क मार्ग से दतिया पहुंचे। यहां दर्शन के बाद वे सड़क मार्ग से ही वापस ग्वालियर के लिए रवाना हो गए।

झोपड़ी में आग, परिवार के 3 सदस्य जिंदा जले

शिवपुरी में दादा-दो पोतियों पर गिरा जलता छप्पर ; आंख खुलने से बच गई तीसरी की जान

शिवपुरी (नप्र)। शिवपुरी में झोपड़ी में आग लगने से तीन लोग जिंदा जल गए। जलता छप्पर दादा और दो पोतियों पर गिर गया। घटना लक्ष्मीपूरा गांव में शनिवार रात करीब 11 बजे की है।

पड़ोसियों ने आग लगने की सूचना फायर ब्रिगेड को दी। बुजुर्ग और एक पोती की मौके पर ही मौत हो गई थी। जबकि दूसरी पोती ने अस्पताल ले जाने के दौरान रास्ते में दम तोड़ दिया। आग लगने का कारण फिलहाल स्पष्ट नहीं हो पाया है।बैराड़ थाना क्षेत्र के रसेरा पंचायत के लक्ष्मीपूरा गांव में रहने वाले वासुदेव और उसकी पत्नी रुकमणी रिश्तेदार की गमी में शामिल होने धौलपुर गए हुए थे। वासुदेव उसकी तीन बेटी अनुष्का, संध्या और ज्योति को अपने पिता हजारी के पास छोड़ गया था। 65 साल के बुजुर्ग हजारी बंजारा पोती संध्या (5) और ज्योति (10) के साथ सो रहे थे। पोती अनुष्का (7) अलग पलंग पर थी। रात करीब 11 बजे झोपड़ी में आग भड़क गई। ज्योति की आंख खुल गई। वह झोपड़ी से बाहर निकल गई, लेकिन उसके दादा और दोनों बहनें झोपड़ी में ही फंस गए।

बच्ची दौड़कर चाचा के पास पहुंची

बताया जा रहा है कि ज्योति दौड़कर पड़ोस में रह रहे चाचा जीतेंद्र बंजारा के पास पहुंची। उन्हें आग लगने की बात बताई। इसके बाद ग्रामीणों ने मोटर से पानी डालना शुरू किया। इस बीच पुलिस, एम्बुलेंस और फायर ब्रिगेड के साथ पहुंची।

यूनियन कार्बाइड के जहरीले कचरे का पीथमपुर में विरोध

जीतू पटवारी बोले- कारखाना जमीन बेचने की तैयारी में सरकार, कचरा जला तो बीमारी फैलेगी

पीथमपुर (नप्र)। पीथमपुर इंडस्ट्रियल वेस्ट मैनेजमेंट (रामकी) कंपनी में आने वाले दिनों में जलने वाले यूनियन कार्बाइड के जहरीले कचरे के निष्पादन को लेकर विरोध तेज हो गया है। कांग्रेस ने आज यहा बड़ा प्रदर्शन किया। इसमें कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी, पूर्व मंत्री सज्जन सिंह वर्मा सहित करीब आधा दर्जन विधायक शामिल हुए।

धरना-प्रदर्शन में शामिल कांग्रेस कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने कहा कि सरकार यूनियन कार्बाइड की जमीन बेचने की तैयारी है। जहरीला कचरा हटते ही इसकी प्रक्रिया शुरू हो जाएगी।

जीतू पटवारी ने कहा कि अगर यूनियन कार्बाइड का कचरा पीथमपुर में जला तो आने वाले समय में सबसे ज्यादा कैंसर के मरीज इसी इलाके में होंगे। यहां कचरा जलाया जाएगा तो ये जहर पानी में भी मिलेगा। समस्या पीथमपुर के लिए ही नहीं इंदौर के लिए भी पैदा होने वाली है। पीथमपुर का जहरीला पानी यशवंत सागर डेम में मिलेगा। इस डेम से इंदौर में पानी सप्लाई होता है। इसके बाद वहां भी गंभीर बीमारियां फैलेंगी। रामकी कंपनी के कारण आस पास के किसानों की जमीन की पैदावार प्रभावित हुई है।जीतू पटवारी ने कहा कि मैं मुख्यमंत्री से कहना चाहता हूं कि प्रदेश सरकार के पास लेंड बैंक है। जहरीले कचरे के निष्पादन के लिए उसका यूज करें।

विधानसभा चुनाव की तैयारी करने कहा- जीतू पटवारी ने कांग्रेस कार्यकर्ताओं से कहा कि विधानसभा चुनाव के एक साल हो गए हैं। अभी चार साल बाकी हैं। हमें ये नहीं सोचना है कि चुनाव तो चार साल बाद हैं। चार साल तो चार दिन की तरह निकल जाएंगे। हमें अगले चुनाव की तैयारी में आज से ही लग जाना है।

7 करोड़ के बंगले में रहता था सौरभ शर्मा

दिवाली पर रिश्तेदार-दोस्तों को बांटे एलईडी टीवी, स्पेशल नोटशीट पर मिली थी आरटीओ में नौकरी

सौरभ शर्मा

भोपाल (नप्र)। लोकायुक्त और आयकर विभाग की टीम ने आरटीओ विभाग के पूर्व कॉन्स्टेबल सौरभ शर्मा के ठिकानों से अब तक 7.98 करोड़ रुपए की संपत्ति बरामद की है। वह भोपाल के शाहपुरा में जयपुरिया स्कूल की फ्रेंचाइजी खोलने वाला था। इसमें चेतन सिंह गौर भी साझेदार है। चेतन के नाम से रजिस्टर्ड कार में ही आयकर विभाग को 52 किलो सोना और 11 करोड़ रुपए नकद मिला था।

सौरभ की मां उमा शर्मा ने अफसरों को बताया कि वह स्कूल की फ्रेंचाइजी के सिलसिले में मुंबई गया है। हालांकि, जांच के दौरान उसके दुबई में होने का पता चला है। लोकायुक्त की रेड के दौरान सौरभ के ठिकाने से चांदी की 200 सिल्लियां भी मिली थीं, जो उसने अपने ऑफिस में जमीन के अंदर गाड़ रखी थीं।

सौरभ शर्मा के किस ठिकाने पर क्या मिला

- * मकान ई-7/78 से ये सामान मिला एक कार सहित घर का सामान- 2.21 करोड़ रुपए।
- * सोने और हीरे के जेवरात- 50 लाख रुपए।
- * नकद राशि- 1.15 करोड़ रुपए।
- * कुल बरामदगी- 3.86 करोड़ रुपए।

मकान ई-7/657 से 30 लाख का सामान मिला- लोकायुक्त की टीम ने चेतन सिंह गौर के मकान ई-7/657 से कुल 30 लाख रुपए का घरेलू सामान बरामद किया। इसमें बेड, टीवी, फ्रिज, पर्दे, कपड़े और इंटीरियर आइटम्स शामिल हैं।

नकद राशि- 1.72 करोड़ रुपए।

चांदी- 234 किलो, कीमत- 21 लाख रुपए।

कुल बरामदगी- 4.12 करोड़ रुपए।

सवा दो करोड़ में खरीदा था बंगला- जहां सौरभ वर्तमान में रहता है, अरेरा कॉलोनी स्थित वह बंगला ई-7/78 उसने 2015 में सवा दो करोड़ रुपए में खरीदा था। हालांकि, सौरभ इसे अपने बहनोई का बंगला बताता है। बंगले की वर्तमान कीमत लगभग 7 करोड़ रुपए है। सूत्रों के मुताबिक, नौकरी करते समय खरीदा गया ये बंगला सौरभ ने किसी अन्य के नाम से खरीदा था।

दिवाली पर रिश्तेदारों-दोस्तों को एलईडी टीवी बांटी- लोकायुक्त टीम को जयपुरिया स्कूल की बन रही बिल्डिंग से 40 पेटी पैक एलईडी टीवी मिलीं। सभी 43 इंच की हैं। सूत्रों के अनुसार, सौरभ शर्मा ने दिवाली के दौरान सैकड़ों टीवी अपने संबंधियों को गिफ्ट के तौर पर बांटी थीं। बाकी टीवी उसने स्कूल की इमारत में छिपाकर रखी थीं।

आयकर विभाग की टीम को मेंडोरी के जंगल में इनोवा कार से 52 किलो सोना और 11 करोड़ रुपए कैश मिले थे। इस कार के साथ चेतन का एक फोटो भी सामने आया है।

आरक्षक से बिल्डर बना सौरभ शर्मा- परिवहन विभाग में पदस्थ सीनियर अफसर बताते हैं कि सौरभ के पिता स्वास्थ्य विभाग में थे। साल 2016 में उनकी अचानक मृत्यु के बाद उनकी जगह अनुकंपा नियुक्ति के लिए सौरभ की तरफ से आवेदन दिया गया। स्वास्थ्य विभाग ने स्पेशल नोटशीट लिखी कि उनके यहां कोई पद खाली नहीं है।

अक्टूबर 2016 में कॉन्स्टेबल के पद पर भर्ती सौरभ की पहली पोस्टिंग ग्वालियर परिवहन विभाग में हुई। मूल रूप से ग्वालियर के साधारण परिवार से संबंध रखने वाले सौरभ का जीवन कुछ ही वर्षों में पूरी तरह बदल गया।

निगम - पंचायत चुनाव को लेकर सरकार असमंजस में

कही-सुनी

रवि भोई

(लेखक पत्रिका समवेत सृजन के प्रबंध संपादक और स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

बताते हैं निगम-पंचायत चुनाव जनवरी में कराने या फिर आगे बढ़ाने को राज्य की विष्णुदेव साय सरकार अनिर्णय की स्थिति में है। निगम-पंचायत चुनाव को लेकर भाजपा में संगठन और सरकार स्तर पर लगातार मंथन चल रहा है, लेकिन फैसला नहीं हो पा रहा है। साय सरकार महापौर और नगर पालिका अध्यक्षों का प्रत्यक्ष चुनाव का फैसला लिया है। इसके अलावा राज्य में पहली बार स्थानीय निकाय और पंचायतों के चुनाव भी साथ-साथ कराने का प्रस्ताव है। साय सरकार इसके लिए विधानसभा के शीतकालीन सत्र में विधेयक पारित करवा लिया है। निगमों में वार्ड वार आरक्षण भी चल रहा है, पर चुनाव की तारीख को लेकर असमंजस की स्थिति बनी हुई है। जनवरी के पहले हफ्ते में ही कई निगमों में महापौर के कार्यकाल खत्म होने जा रहे हैं। भी राज्य के सभी महापौर कांग्रेस के हैं। साफ़ है कि सरकार कुछ दिन प्रशासक बैठा कर अपने अनुकूल माहौल बनाएगी। चर्चा है कि यही वजह है कि निगम और पंचायतों के चुनाव की तारीख को सरकार कुछ आगे खींचना चाहती है।

भाजपा में फूफा भी, फूफी भी

आम धारणा है कि दूल्हे की बारात में फूफा के तेवर कुछ अलग ही होते हैं। बताते हैं इन दिनों भाजपा के कुछ नेता फूफा के रोल में हैं, तो कुछ महिला नेता बुआ (फूफी) की भूमिका में।चर्चा है कि भाजपा के कुछ फूफा और फूफी आजकल सदन के बाहर और भीतर अपनी सरकार को घेरने में लगे है, तो कुछ मुंह फुलाए हुए हैं। खबर है कि मंत्री न बन पाने के कारण फूफा और फूफी नाराज चल रहे हैं। चर्चा है कि पद और सत्कार देने के बाद भी भाजपा की कुछ महिला नेता नाराज चल रही हैं। अब भाजपा संगठन और सरकार राज्य में खाली दो मंत्री पद को भर नहीं पा रही है। आगे -पीछे हो रही है। हर सरकार में फूफा-फूफी की भूमिका निभाने वाले नेता रहते हैं। यह कोई नई बात नहीं है। राज्य में जब डॉ रमन सिंह की सरकार थी, तब भी भाजपा के कई नेता फूफा और फूफी की भूमिका में थे। कुछ मुख्यमंत्री की दौड़ में पिछड़ जाने के कारण फूफा-फूफी की भूमिका में आ गए थे तो कुछ अपने मन माफिक काम नहीं करा पाने के कारण फुफकार मारने लगे थे। अब मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय अपने जमाने के फूफा और फुफियों को किस तरह मनाते हैं, यह देखने वाली बात होगी।

अमिताभ जैन बनेंगे मुख्य सूचना आयुक्त?

चर्चा है कि मुख्य सचिव अमिताभ जैन मुख्य सूचना आयुक्त बन सकते हैं। मुख्य सचिव के रूप में अमिताभ जैन का कार्यकाल जून 2025 तक है। 1989 बैच के आईएएस अमिताभ जैन 30 नवंबर 2020 से छत्तीसगढ़ के मुख्य सचिव हैं। कहा जा रहा है कि जनवरी -फ़रवरी में अमित अग्रवाल को मुख्य सचिव की जिम्मेदारी देकर अमिताभ जैन को मुख्य सूचना आयुक्त बनाया जा सकता है। अमिताभ जैन मुख्य सूचना आयुक्त बनते हैं तो उन्हें तीन साल और सेवा का मौका मिल जाएगा। पहले मुख्य सूचना आयुक्त का कार्यकाल पांच साल का था और हाईकोर्ट के जज के सामान वेतन और भत्ते का प्रावधान था। अब कार्यकाल तीन साल और पद को मुख्य सचिव के स्तर का कर दिया गया है। एम के राउत का कार्यकाल समाप्त होने के बाद राज्य में मुख्य सूचना आयुक्त का पद रिक्त है। बताते हैं कि अमिताभ जैन ने मुख्य सूचना आयुक्त के लिए सामान्य प्रशासन विभाग को आवेदन भेज दिया है। मुख्य सूचना आयुक्त के लिए 16 दिसंबर तक आवेदन करना था। राज्य के रिटायर्ड चीफ सेक्रेटरी में अजय सिंह अभी राज्य निर्वाचन आयुक्त हैं।

आखिरकार सुबोध सिंह बने मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव

जब से राज्य में भाजपा की सरकार बनी, तब से मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव के तौर पर 1997 बैच के आईएएस सुबोध सिंह का नाम चर्चा में था। आखिरकार 2 दिसंबर को उन्हें जिम्मेदारी दे दी गई। भारत सरकार से प्रतिनियुक्ति पर लौटने के एक दिन बाद ही उन्हें मुख्यमंत्री का प्रमुख सचिव बना दिया गया। बताते हैं सुबोध सिंह को छत्तीसगढ़ भेजने के लिए मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने 16-17 दिसंबर को छत्तीसगढ़ यात्रा के दौरान केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से बात की। इसके बाद भारत सरकार ने सुबोध सिंह की वापसी की प्रक्रिया पूरी की। डॉ रमन सिंह के कार्यकाल में सुबोध सिंह मुख्यमंत्री के सचिव रह चुके हैं। माना जा रहा है कि सुबोध सिंह के कार्यभार संभालने के बाद मुख्यमंत्री सचिवालय में बदलाव नजर आएगा। सुबोध सिंह राज्य के कई जिलों में कलेक्टर रहने के साथ भारत सरकार में करीब पांच साल पदस्थ रहे। समझा जा रहा है कि सुबोध सिंह केंद्र और राज्य सरकार के बीच सेतु का भी काम करेंगे।

1992 बैच के आईपीएस बन सकते हैं डीजीपी

जी पी सिंह की बहाली के बाद कहा जाने लगा है कि छत्तीसगढ़ का अगला डीजीपी 1992 बैच का कोई आईपीएस अफसर बनेगा। 1992 बैच के आईपीएस अफसरों में अरुणदेव गौतम और पवनदेव हैं। वैसे छत्तीसगढ़ सरकार ने नए डीजीपी के लिए भारत सरकार को भेजे पैनल में अरुणदेव गौतम और पवनदेव के अलावा 1994 बैच के आईपीएस हिमांशु गुप्ता का नाम भेजा है। तीनों डीजी हैं। जी पी सिंह 1994 बैच के हैं। सेवा से बर्खास्तगी के चलते उन्हें पिछले दिनों एडीजी के रूप में ही ज्वाइनिंग देनी पड़ी, लेकिन 1994 बैच के आईपीएस की वरिष्ठता सूची में उनका नाम हिमांशु गुप्ता से ऊपर है। इसके अलावा पांच राज्यों पंजाब, नागालैंड, जम्मू एंड कश्मीर, तेलंगाना और मेघालय में अभी 1992 बैच के आईपीएस डीजीपी हैं। इस कारण माना जा रहा है कि छत्तीसगढ़ का डीजीपी भी 1992 बैच का होगा। वैसे हल्ला है कि अशोक जुनेजा को छह माह का एक्सटेंशन और मिल सकता है। अब देखते हैं गणित क्या बैठता है।

क्या जोगी कांग्रेस का विलय हो पाएगा कांग्रेस में ?

जोगी कांग्रेस के नेता अमित जोगी और रेणु जोगी ने अपनी पार्टी का विलय कांग्रेस में करने के लिए प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज को पत्र लिखा है। स्व. अजित जोगी ने कांग्रेस से ही टूटकर जोगी कांग्रेस बनाया था। 2018 के विधानसभा चुनाव में जोगी कांग्रेस ने पांच सीटें जीत कर अच्छी उपस्थिति दर्ज की थी, लेकिन 2023 के विधानसभा चुनाव में उसे एक भी सीट नहीं मिली। वर्तमान में जोगी कांग्रेस का जनाधार नहीं के बराबर हो गया है। जोगी कांग्रेस की नींव रखने वाले अधिकांश नेताओं ने पार्टी छोड़ दी है। अब जोगी कांग्रेस में रेणु जोगी और अमित जोगी ही दो जाने-पहचाने चेहरे रह गए हैं, ऐसे में कांग्रेस की मर्जी पर फैसला निर्भर करेगा, फिर पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और पूर्व उपमुख्यमंत्री टी एस सिंहदेव अमित जोगी के कांग्रेस वापसी का विरोध करते रहे हैं। जोगी परिवार की सीधी पहुंच सोनिया गांधी से रही है, ऐसे में जोगी कांग्रेस का कांग्रेस में विलय का फैसला प्रदेश इकाई लेगी, इसकी उम्मीद कम है। कहा जा रहा है कि जोगी कांग्रेस के विलय का फैसला तो गांधी परिवार की इच्छा पर निर्भर करेगा। इसके लिए रेणु जोगी और अमित को सोनिया या राहुल गांधी से ही मिलना पड़ेगा। मां -बेटे ने विलय के लिए प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष को पत्र लिखकर जरूर राज्य की राजनीतिक गर्मी बढ़ा दी है।

मंत्रियों को नसीहत मिली

कहते हैं कि केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह 16-17 दिसंबर को अपनी छत्तीसगढ़ यात्रा के दौरान एक होटल में कुछ मंत्रियों को तलब किया था। चर्चा है कि एक मंत्री को नसीहत भी दी गई। बताते हैं कि एक मंत्री के बारे में आरएसएस और संगठन के लोगों ने हाईकमान से शिकायत की थी। अब देखते हैं अमित शाह की नसीहत के बाद मंत्रियों के काम में क्या सुधार आता है। कुछ महीने पहले राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री शिवप्रकाश ने भी कुछ मंत्रियों को तलब किया था और कामकाज को लेकर नसीहत दी थी।

अमित कटारिया की पोस्टिंग लटकी

2004 बैच के आईएएस अमित कटारिया की सरकार ने अब तक पोस्टिंग नहीं की है। कटारिया को सामान्य प्रशासन विभाग में ज्वाइनिंग दिए करीब एक माह हो गया है। पहले हल्ला था कि अमित कटारिया को लोक निर्माण विभाग में पदस्थ किया जाएगा और डॉ कमलप्रीत सिंह को हेल्थ विभाग का सचिव बनाया जा सकता है। अभी हेल्थ मनोज पिंगुआ के पास है। मनोज पिंगुआ गृह विभाग के भी प्रमुख सचिव हैं। उम्मीद की जा रही है कि जनवरी के पहले हफ्ते में मंत्रालय स्तर पर आईएएस अफसरों के विभागों में कुछ हेरफेर हो सकता है। वैसे भी दिल्ली से छत्तीसगढ़ कैडर के कई अफसर भाजपा राज में वापस आ गए हैं। कहते हैं कि सचिवों के लिए कमरों के साथ विभाग भी कम पड़ने लगे हैं।

मार्ग बताने वाले संकेतकों के न होने से वाहन चालक भटक जाते हैं रास्ता

इन्हीं चौराहों पर जाम और दुर्घटनाएं भी होती हैं ज्यादा, खतरनाक और भूल-भुलैया साबित हो रहे शहर के चौक-चौराहे

संजय द्विवेदी, बैतूल। शहर के तिराहे और चौराहे खामियों से भरे होने के साथ-साथ खतरनाक और भूल-भुलैया साबित हो रहे है। इन चौक-चौराहों पर रास्ता बताने वाले संकेतक नहीं है। कुछेक चौक को छोड़ दे, तो ज्यादातर चौराहों पर वाहन चालकों को रास्ता भी पूछकर तय करना पड़ता है। ज्यादा दिक्कत गेंदा चौक, कारगिल चौक, नेहरू पार्क के पीछे वाले पीडब्ल्यूडी चौक, टांगा चौक, एसपी ऑफिस चौक, कॉलेज चौक, मुल्ला पेट्रोल पंप चौक, लल्ली चौक, कोतवाली चौक, कमानी गेट सहित शहर के अन्य चौक-चौराहे और तिराहे पर है। यहां न तो यातायात को कंट्रोल करने के लिए ट्रैफिक सिग्नल लगे है, न ही पर्याप्त और मापदंड के अनुसार गति अवरोधक है। जबकि दिशा और शहर के मार्गों को चिन्हित करने वाले संकेतकों का भी अभाव बना हुआ है। चालकों को ये समझ नहीं आता कि आखिर किस तरफ जाया जाए। संकेतकों के अभाव में आए दिन वाहन चालक रास्ता भटक जाते है। जिसके परिणाम स्वरूप आमजन और वाहन चालकों को कभी-कभी जाम जैसी स्थिति से भी दो-चार होना पड़ता है, तो कभी दुर्घटनाग्रस्त होकर इसका खामियाजा चुकाना पड़ता है।

नये वाहन चालकों को पूछकर तय करना पड़ता है रास्ता – शहर के चौक-चौराहों और तिराहे पर रास्ता बताने वाले संकेतकों का अभाव सबसे ज्यादा बाहर से आने वाले नए वाहन चालकों को खलता है। बाहर से आने वाले वाहन चालक गूगल मैप के अनुसार रास्ता तलाशते है और रास्ता भटक जाते है। चूंकि कही-कही यह मैप भी अपडेट नहीं है। शहर के चौक-चौराहों पर ट्रैफिक सिग्नल तक नहीं है। कॉलेज चौक पर ट्रैफिक सिग्नल लगाने की योजना भी लंबे समय से ठंडे बस्ते में पड़ी है। वैसे शहर के कुछ चौक-चौराहे ऐसे भी है, जहां वाहनों का सबसे ज्यादा और भारी दबाव बना रहता है, लेकिन फिर भी चौक-चौराहों पर दुर्घटनाओं को रोकने के लिए कोई सार्थक उपाय तक नहीं किए गए है। जिससे कि वाहनों की दिशा सुनिश्चित या वाहन चालक दुर्घटना से बच सके।

हर दिन होती है चौराहों पर दुर्घटनाएं – शहर के भीतर चौक-चौराहों पर ऐसा कोई दिन नहीं जाता, जिस दिन छोटी-मोटी दुर्घटनाओं के बारे में जानकारी न मिले। शहर के अंदर एंट्री करने के लिए ज्यादातर वाहन गेंदा चौक होते हुए बैतूल शहर में आते हैं, यह चौक इतना सकरा है कि यहां आए दिन दुर्घटनाएं होती रहती है। यहां सभी बसों का स्टाफ भी है परंतु बस खड़ी होने के बाद पार्किंग के लिए बिल्कुल भी जगह नहीं बच पाती है। यँहा दोपहिया वाहन से लेकर बड़े वाहनों के आपस में भिडने या ट्रॉफिक जाम होने जैसी स्थिति आए दिन निर्मित होती रहती है। शहर के चौक-चौराहों से भारी वाहनों का आवागमन भी निरंतर चलता रहता है। जिससे आमजनता को कभी दुर्घटना, तो कभी जाम लगने के कारण परेशानियों का सामना करना पड़ता है। चौक-चौराहों के पूर्व कोई गति अवरोध भी नहीं बने है। जिससे कि कम से कम वाहनों की तेज रफ्तार ही कंट्रोल हो सके। हालात यह है कि वाहन चालक सरपट वाहनों को भगाते हुए निकल जाते है। यहीं कारण है कि कई बार चौक-चौराहों पर दुर्घटनाएं होती है।

शहर के चौक-चौराहे और तिराहे पर यह है हाल

(1) कॉलेज चौक

कॉलेज चौक शहर के सबसे व्यस्ततम चौक में से एक है, यहां जिले के सबसे बड़े कॉलेज के अलावा कलेक्टर बंगला भी है। इसी चौक से आमला टू लेन मार्ग भी जुड़ा है। बस स्टैंड से सारणी के लिए निकलने वाली बसें भी यहां रूककर यात्रियों को बैठाती है। कॉलेज के कारण इस चौक पर हमेशा यातायात का दबाव रहता है, लेकिन दुर्घटनाओं को रोकने कोई इंतजाम नहीं है। वाहनों के दबाव के कारण यातायात व्यवस्था अस्त-व्यस्त ही नजर आती है। सुरक्षा की दृष्टि से यहां साधनों के अभाव के कारण जाम की स्थिति बनती है। इस कॉलेज चौक पर कई बार वाहनों के भिड़ंत और गंभीर दुर्घटनाएं भी हो चुकी है।

(2) एसपी ऑफिस चौराहा

यह चौराहा बस स्टैंड से गंज क्षेत्र और कॉलेज चौक से नेहरू पार्क जाने वाले मार्ग को जोड़ता है। इस चौराहे पर वाहनों का सदैव आवागमन बना रहता है। यह चौक भी शहर के व्यस्ततम चौक में से है। जहां समीप ही एसपी ऑफिस है। गंज क्षेत्र, बस स्टैंड क्षेत्र, कलेक्ट्रेट क्षेत्र, पुलिस लाइन सहित आवागमन करने वाले हजारों लोगों का इस चौक से रोजाना गुजरना होता है। लेकिन यहां वाहनों की संख्या के सामने सारे प्रयास विफल नजर आती है। मार्ग को दर्शाने वाले संकेतक नहीं होने की वजह से आए दिन दुर्घटनाएं होती है। जिसका खामियाजा लोगों को चोटिल होकर चुकाना पड़ता है।

(3) कारगिल चौक

यह चौराहा गंज क्षेत्र, सदर हाइवे को जोड़ता है। इसी चौराहे के एक दिशा में प्राइवेट और सरकारी कई अस्पताल है। दूसरी दिशा में गंज क्षेत्र जाने वाला मार्ग, तीसरी दिशा में बस स्टैंड मार्ग और चौथी दिशा में यह मार्ग गेंदा चौक से बडोरा जाने वाले मुख्य मार्ग को जोड़ता है। इससे इस मार्ग पर हमेशा भारी वाहनों का भी आना-जाना लगा रहता है। वाहन चालक यहां पहुंचकर भूल-भुलैया जैसी स्थिति में फंस जाते है और उन्हें पूछ-पूछकर रास्ता तय करना पड़ता है। यहां शहर के अन्य चौक-चौराहों की अपेक्षा ज्यादा दुर्घटनाएं भी होती है, क्योंकि यह शहर का सबसे व्यस्त चौराह है। वाहनों की टक्कर और चौराहे पर संकेतक बोर्ड नहीं होने से चालक परेशान है।

इनका कहना

जल्द ही सभी चौक-चौराहों पर संकेतक लगाये जायेगे। अभी कॉलेज चौक पर मुख्यमंत्री अधोसंरचना के तहत ढाई करोड़ की लागत से सौंदर्यीकरण किए जाने की योजना शीघ्र ही मूर्त रूप लेगी। फिर ट्रैफिक सिग्नल भी लगाया जायेगा। पहले फेस में शहर के 6 चौराहों पर संकेतक लगाकर 50 लाख की लागत से सौंदर्यीकरण किए जाने की योजना है, उसके बाद अन्य 6 चौराहों पर भी 50 लाख की लागत से सौंदर्यीकरण कर संकेतक लगाये जायेंगे।

– **सतीश मटसेनिया,** सीएमओ, नगरपालिका बैतूल।

सतपुड़ा वैली के विद्यार्थियों ने शैक्षणिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में बिखेरा अपना जलवा

सांस्कृतिक प्रस्तुतियों और सम्मान समारोह से गूंजा सतपुड़ा वैली पब्लिक स्कूल

बैतूल। जिले के प्रतिष्ठित सतपुड़ा वैली पब्लिक स्कूल में वार्षिक उत्सव आरंभ से शिखर तक का आयोजन भव्यता के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि पूर्व विधायक निलय डागा, विशिष्ट अतिथि निर्मला डागा, स्कूल डायरेक्टर दीपाली निलय डागा, प्राचार्य जया चक्रवर्ती और मैनेजर शिवशंकर मालवीय ने मंच के समक्ष दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की। अतिथियों का मंच पर स्वागत करने के बाद स्कूल के होनहार विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया, जिन्होंने शैक्षणिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर स्कूल और जिले का नाम रोशन किया। वार्षिक प्रतिवेदन स्कूल की छात्रा दीवा डागा ने प्रस्तुत किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम की शुरुआत ग्रुप प्रदर्शन से हुई, जिसने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। तबले की थाप, कीबोर्ड की गूंज, गीत के सुर और अभिनय से सजे नाटकों ने कार्यक्रम में अलग ही रंग भर दिया। खास तौर पर रतन टाटा को श्रद्धांजलि स्वरूप प्रस्तुति और रोबोटिक डांस दर्शकों के लिए मुख्य आकर्षण रहे। इस उत्सव के दौरान स्कूल भवन का नामकरण भी किया गया। पूर्व विधायक निलय डागा और उनकी धर्मपत्नी दीपाली डागा ने स्कूल भवनों को आरंभ और जेनिथ नाम दिया। दीपाली डागा ने कहा कि ये नाम सफलता और दृष्टि विकास के प्रतीक हैं। अपने संबोधन में निलय डागा ने कहा कि छात्रों को अपने जीवन में पारदर्शिता के साथ शिक्षा और गतिविधियों में आगे बढ़ना चाहिए। दीपाली डागा ने पालकों से अपील की कि वे बच्चों की गलतियों पर पर्दा डालने की बजाय उन्हें सही मार्गदर्शन दें। कार्यक्रम की सफलता में स्कूल के सभी स्टाफ और शिक्षकों का विशेष योगदान रहा। स्कूल परिवार की ओर से सभी छात्रों और पालकों के लिए भोजन व्यवस्था की गई थी। डायरेक्टर दीपाली डागा ने कार्यक्रम के अंत में सभी का आभार व्यक्त किया।

बैतूल में 5662 लोगों का हुआ प्रकृति परीक्षण

केंद्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास उइके का भी किया प्रकृति परीक्षण

बैतूल। सुशासन सप्ताह और जनकल्याण शिविर में आयुष विभाग बैतूल द्वारा प्रकृति परीक्षण किया जा रहा है। आयुक्त, संचालनालय आयुष भोपाल के निर्देशानुसार और कलेक्टर बैतूल के मार्गदर्शन में यह अभियान जिले में जोर-शोर से चल रहा है। 21 दिसंबर को जिला आयुष अधिकारी डॉ. योगेश चौकीकर की उपस्थिति में केंद्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास उइके का प्रकृति परीक्षण किया गया। इस अवसर पर कुल 849 लाभार्थियों ने इस अभियान का लाभ लिया। 26 नवंबर 2024 से शुरू हुए इस अभियान में अब तक कुल 5662 लोगों का प्रकृति परीक्षण किया जा चुका है। इस दौरान आयुष चिकित्सा अधिकारियों, सीएएमओ और पैरामेडिकल स्टाफ ने जिला बैतूल के विभिन्न स्थानों पर शिविर लगाकर लोगों को स्वास्थ्य लाभ पहुंचाया। शिविरों में प्रकृति परीक्षण के जरिए नागरिकों को

उनकी स्वास्थ्य स्थिति और जीवनशैली को बेहतर बनाने के उपाय सुझाए गए। आयुष विभाग की यह पहल जिले में स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत कर रही है। जनकल्याण शिविर और सुशासन सप्ताह जैसे अभियानों के जरिए ग्रामीण क्षेत्रों में प्रशासन की सक्रिय भागीदारी भी सुनिश्चित कर रही है। इस मुहिम को लोगों द्वारा काफी सराहा जा रहा है।

निजी स्कूलों के लिए मान्यता आवेदन आज से शुरू

23 जनवरी तक कर सकते हैं आवेदन

बैतूल। राज्य शिक्षा केंद्र भोपाल ने सत्र 2025-26 के लिए निजी स्कूलों की नवीन मान्यता और मान्यता नवीनीकरण हेतु गाइडलाइन जारी कर दी है। इस प्रक्रिया के तहत स्कूल आज 23 दिसंबर 2024 से 23 जनवरी 2025 तक आरटीई एप के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। जिला परियोजना समन्वयक बैतूल जितेन्द्र कुमार भनारिया ने बताया कि जिन स्कूलों की मान्यता मार्च 2025 तक समाप्त हो रही है, उन्हें मान्यता नवीनीकरण के लिए आवेदन करना अनिवार्य है। साथ ही जो स्कूल पहली बार मान्यता प्राप्त करना चाहते हैं, वे भी इस अवधि में आवेदन कर सकते हैं। राज्य शिक्षा केंद्र ने मान्यता प्रक्रिया को सरल और पारदर्शी बनाने के लिए आरटीई एमपी मोबाइल एप तैयार किया है। इस एप के जरिए अशासकीय स्कूल अपने मोबाइल से जरूरी जानकारी दर्ज कर, फोटो और दस्तावेज जियो टैग के माध्यम से अपलोड कर सकते हैं। इससे आवेदन की प्रक्रिया सुगम हो गई है। अधिकारियों ने बताया कि यह एप स्कूलों को अपने स्थान से ही आवेदन की सुविधा प्रदान करता है, जिससे समय और संसाधनों की बचत होती है। सभी स्कूलों को निर्धारित तिथि तक आवेदन करने की सलाह दी गई है।

खेत में मिली अधेड़ की गला कटी हुई लाश, शुक्रवार से था लापता

बैतूल। चिचोली थाना क्षेत्र अंतर्गत आमलपुर में रविवार सुबह एक अधेड़ की गला कटी हुई लाश मिली है। मृतक की शिनाख्त बाला वरकड़े (50) के रूप में हुई है। सूचना मिलते ही एएसपी कमला जोशी भी घटना स्थल पर मुआयना के लिए पहुंची है, वहीं एफएसएल टीम को भी बुलाया गया है। पूर्व जनपद सदस्य डोमा सिंह कुमरे ने बताया कि गांव के पास लालमन के खेत के पास रविवार को एक शव मिलने की जानकारी मिलने पर ग्रामीण मौके पर पहुंचे तो खेत में गला कटी हुई लाश पड़ी थी।

जनपद सदस्य ने बताया कि मृतक बाला वरकड़े पिछले शुक्रवार शाम जानवर चराने के बाद घर लौटा था। शाम को वह दुकान जाने का कहकर निकला था, लेकिन दोबारा नहीं लौटा। परिवार वाले उसकी शुक्रवार रात से तलाश कर रहे थे। रविवार उसकी लाश उसके रिश्तेदार लालमन के खेत के पास पाई गई है। मृतक की किसी धारदार हथियार से गर्दन कटी हुई है। सूचना पर पुलिस बल मौके पर पहुंचकर जांच कर रहा है। बता दे कि चिचोली थाना क्षेत्र में शनिवार से हत्या की यह दूसरी वारदात है। शनिवार सुबह भी यहां आमला निवासी एक युवक की हाईवे पर सिर कुचली लाश मिली थी। उसका मामला अब तक सुलझा नहीं है और अब रविवार सुबह फिर एक अधेड़ की गला कटी हुई लाश मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है।

पूर्व प्रधानमंत्री, भारत रत्न अटलजी की जन्म जयंती एवं वीर बाल दिवस पर प्रत्येक मंडल के बूथों में होंगे कार्यक्रम

भाजपा कार्यालय में जिला स्तरीय संगठनात्मक बैठक सम्पन्न हुई

धार। जिला भाजपा कार्यालय में रविवार को जिला स्तरीय संगठनात्मक बैठक सम्पन्न हुई जिसमें आगामी कार्यक्रम 25 दिसम्बर पर पूर्व प्रधानमंत्री, भारत रत्न, श्रध्येय अटल बिहारी जी की जन्मजयंती (सुशासन दिवस) एवं वीर बाल दिवस को लेकर कार्ययोजना बनाई। मुख्य अतिथि भाजपा प्रदेश मंत्री जयदीप पटेल ने जिला स्तरीय संगठनात्मक बैठक को संबोधित किया। इस दौरान भाजपा जिला अध्यक्ष मनोज सोमानी,जिला महामंत्री प्रकाश धाकड़,सुशासन दिवस कार्यक्रम संयोजक एवं जिला उपाध्यक्ष विश्वास पांडे,वीर बाल दिवस संयोजक सौरभ शर्मा,जिला उपाध्यक्ष निलेश भारती मंचासीन रहे।

भाजपा जिलाध्यक्ष मनोज सोमानी ने स्वागत भाषण में कहा कि 29 दिसंबर रविवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी मन की बात कार्यक्रम को हर बूथ पर करना है। जिले के सभी नव निर्वाचित मंडल अध्यक्ष का प्रथम बैठक में स्वागत करते हुए कहा कि आप सभी को संगठन की पंच निष्ठा याद रहे।

भाजपा प्रदेश मंत्री जयदीप पटेल ने नव निर्वाचित मंडल अध्यक्षों को बधाई देते हुए कहा कि आप सभी भाजपा को मजबूत करने के लिए कार्य करे और आने वाले सभी कार्यक्रमों का सफल आयोजन करे।

सुशासन दिवस कार्यक्रम संयोजक विश्वास पांडे ने कहा कि भारत रत्न श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी की 25 दिसंबर जन्म जयंती को पूरे देश में 'सुशासन दिवस' के रूप मनाते हैं। यह

कार्यक्रम जिले के प्रत्येक बूथ स्तर पर अटल स्मृति सभाओं का आयोजन किया जाना है वहा पर श्रध्येय अटल जी के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें याद कर पुष्पांजलि अर्पित की जाये। मंडल स्तर पर प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अंतर्गत निर्मित किसी सड़क पर भाजपा के झंडे और तख्ती को लेकर एक किलोमीटर लंबी सुशासन यात्रा निकाली जाए।

वीर बाल दिवस संयोजक सौरभ शर्मा ने कहा कि 26 दिसंबर को वीर बाल दिवस पर जिले के प्रत्येक बूथ, मंडल व जिला स्तर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन होने जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार ने 26 दिसंबर को वीर बाल दिवस को राष्ट्रीय दिवस घोषित किया है। गुरु गोविन्द सिंह जी के प्रकाश पर्व के अवसर पर साहिबजादों बाबा जोरावर सिंह और बाबा फ़तेह सिंह जी की शहादत की स्मृति में वीर बाल दिवस मनाना हैं। जिला स्तर पर बौद्धिक संगोष्ठी का आयोजन तथा मंडल स्तर पर प्रभात फेरी होना है। बैठक में अतिथियों ने सभी 29 मंडलों के नवनियुक्त अध्यक्षों को भाजपा का अंगवस्त्र पहनाकर और पुष्पगुच्छ भेंटकर स्वागत किया। भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि जिला स्तरीय संगठनात्मक बैठक में सभी मंडल अध्यक्ष मंडल में कार्यक्रम सहयोगी,सुशासन दिवस) एवं वीर बाल दिवस जिला सह संयोजक दीपक फेमस ओपी पाटीदार दीपक बिड़कर सहित जिला पदाधिकारी जगदीश जाट मनीष प्रधान राधेश्याम मुकाती विवेक गौड़ दीपक सिंह रघुवंशी मौजूद रहे। संचालन महामंत्री प्रकाश धाकड़ व आभार जिला उपाध्यक्ष निलेश भारती ने माना।

ऑनलाईन सप्लाई हो रही प्रतिबंधित दवाएं

अभी तक जारी हैं कोविड के समय दी गई छूट, दवा विक्रेताओं ने जताई आपत्ति

धार। कोविड के दोरान ऑन लाइन कंपनियों को दी गई दवाएं बेचने छुट अब भी जारी हैं । पूरे देश की तरह जिले में भी इसका विरोध हो रहा हैं। जिला केमिस्ट एंड ड्रगिस्ट एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. अशोक शास्त्री ने सरकार की इस अनुमति को तत्काल रद्द करने की माँग की हैं । पूरे विश्व में फैली कोरोना महामारी तथा लॉक डॉउन के चलते मरीजों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए केंद्र सरकार द्वारा एक अधिसूचना जारी कर दवाओं के निर्माण, बिक्री और वितरण को नियमित करने के लिए औषधि अधिनियम की धारा 26 बी के तहत कुछ शर्तों के साथ घर - घर दवाओं की आपूर्ति की अनुमति दी गई थी । इसके तहत दवाओं की बिक्री के लिए प्रिस्क्रिप्शन पर मुहर लगाने की आवश्यकता के नियम 65 को अस्थाई रूप से केवल विशेष परिस्थितियों में अलग रखा गया था। अब जबकि देश इस महामारी से मुक्त हो चुका हैं, स्थितियाँ सामान्य हैं फिर भी उक्त ऑन लाइन दवाओं की सप्लाई निरंतर चल रहीं हैं।

जन स्वास्थ्य के लिए खतरा ....

जिला केमिस्ट एंड ड्रगिस्ट एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष डॉ. अशोक शास्त्री ने बताया कि कोविड 19 महामारी के समय घर घर दवाईयाँ पंहुचाने हेतु मिली विशेष अनुमति की आड़ में धोखाधड़ी और ग़ैरक़ानूनी कारोबार जोरो से हैं। कई ऑनलाईन कंपनियाँ न केवल नकली और एक्सपेयरी डेट की दवाएँ मरीज़ों के माथे मढ़ रहे हैं, बल्कि प्रतिबंधित और सिर्फ योग्य चिकित्सकों के लिखित परामर्श पर मिलने वाली प्रतिबंधित दवाई भी धड़ल्ले से उपलब्ध करवाई जा रही हैं। यह परिस्थिति जन स्वास्थ के लिए बहुत ही हानिकारक हैं।

शोभित शर्मा और प्रशासनिक प्रबंधन

राजकुमार जैन
(लेखक स्वतंत्र विचारक हैं)

इन दिनों काफी चर्चा में परिवहन विभाग का आरक्षक सौरभ शर्मा को लेकर सत्ताधारी दल के नेता और विपक्ष के नेताओं में व्यंग्य बाणों की अनवरत बौछार शुरू हो गई है। पत्रकारों की जैसे लॉटरी खुल गई उन्हें खबर देने का चटपटा मसाला मिल गया। सब व्यस्त हैं घटना के नगदी कारण में।

सत्तारूढ़ दल कह रहा है यह परिणाम हमारी जीरो टॉलरेंसी नीति का, वहीं विपक्ष का रहा है देखा कैसा भ्रष्टाचार है इस सरकार में। नौकरशाही भीष्म पितामह के समान मौन होकर टुकुर-टुकुर ताक रही है जैसे वह अच्छे बुरे के भाव से ऊपर है और भ्रष्ट सौरभ शर्मा दुबई में यह सब खबरें पढ़कर आनंद ले रहा हैं। हो सकता है लौटे ही नहीं। हमारी दुबई से अपराधी प्रत्यारोपण संधि नहीं है।

हमने पढ़ाई के दौरान राजनीतिक विज्ञान में तीन सूत्र पड़े थे जिनका हिंदी अनुवाद है। एक, राजनेता (मंत्री) सवार है, नौकरशाही घोड़ा। यदि घोड़सवार अच्छा होगा तो घोड़ा सरपट भागेगा और घुड़सवार कमजोर होगा तो सवार को फेंककर बेलगाम हो जाएगा। इस सिपाही की अकूत दौलत और उसके लूटने की समय अवधि में तीन राजनीतिक मुखिया रहे हैं। मौजूदा के समय में छापा पड़ा, शेष दो के समय लूटमार हुई। सुविज्ञ पाठक तय करें कौन प्रशासनिक रूप से अच्छा सवार है। दूसरी युक्ति पढी थी जेम्स एम लेंडिस नाम के फ्रांसीसी राजनीतिक विचारक की जो कहता था अच्छा प्रशासक कठोर दमनकारी कानून का क्रियान्वयन एसे करेगा कि आम आदमी को राहत मिले। पर बुरा प्रशासक अच्छे लाभकारी कानून से भी जनता का शोषण करेगा। एक ब्रिटिश विचारक वॉलटर गेल हॉर्न कहते हैं यदि कोई कानून अन्यायकारी है पर अधिकारी भला है तो वह उस कानून से सीमित नुकसान होने देगा। पर यदि अधिकारी अयोग्य, अक्षम है तो वह अच्छे कानून से भी जनता का दामन करेगा।

यह दोनों युक्तियां इस संदर्भ में सुसंगत है क्योंकि सौरभ की अनुकंपा नियुक्ति के समय सामान्य प्रशासन विभाग, स्वास्थ्य विभाग और परिवहन विभाग के आईएएस अफसर नियम कानून को ताक में रखकर फाइल दौड़ते रहे। उनका हम आप प्रशासन कुछ नहीं बिगड़ेगा। पहले भी नौकरशाही ने नियमों का उल्लंघन किया है पर हम 'आक थू' कहकर उन्हें धिक्कार सकते हैं। इसी प्रकार 27 चेक पोस्ट का प्रबंधन एक सिपाही के हाथ में था और जिम्मेवार ऑफिसर जिनकी संख्या 100 से अधिक होगी नीची निगाह करके आदरणीय मठाधीश सौरभ शर्मा के हाथों से टिप ले रहे थे। आईपीएस, राज्य लोक सेवा आयोग के अफसर हो या किसी होटल के वेटर या कोठी पर गुजारा करने वाली तवायफ आप तय करें और मेरे विचार से पाठक की घनघोर भर्तसना की पात्र यह नौकरशाही भी है।

और अंत में यह छापा ड्रामा तो नहीं है अपने ही बागियों से निपटने का। हमें ज्ञात है इस भ्रष्टाचार के पर्दाफाश से ना तो सरकार, ईडी, आयकर को वहावही मिलेगी ना जनता में आक्रोश होगा। तीन चार दिन में ऐसे भूल जाएंगे जैसे व्यापम आरक्षक नियुक्ति आदि को भूल गए। फिर भी इरादा कुछ हो मोहन यादव की सरकार घोटाले को उजागर करने के कारण बधाई की पात्र रहे है।

11 दिसम्बर - 26 दिसम्बर 2024
जनकल्याण पर्व
1 वर्ष
मोहन यादव सरकार
काम लगातार-फैसले असरदार
पुष्कर सिंह धामी
मुख्यमंत्री, उत्तराखंड
सागर गौरव दिवस
लाखा बंजारा झील सौंदर्यीकरण कार्यों का लोकार्पण
विकास कार्यों का लोकार्पण एवं भूमिपूजन
एवं
24 लाख से अधिक बहनों को सिलेंडर रीफिलिंग के लिए ₹ 26 करोड़ राशि का अंतरण
गरिमामयी उपस्थिति
डॉ. मोहन यादव
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश
पुष्कर सिंह धामी
मुख्यमंत्री, उत्तराखंड
23 दिसम्बर, 2024 | अपराह्न 2:30 बजे
संजय ड्राइव रोड, सागर
"विकास एक सतत् प्रकिया है। इस प्रक्रिया में प्रयासों की निरंतरता का अपना महत्व है और प्रदेश सरकार यही कर रही है। प्रयास छोटे हों या बड़े, उन्हें लागू करने की इच्छा अपेक्षित परिणाम देती है। हम प्रदेशवासियों के सहयोग से ये परिणाम प्राप्त करें, यही हमारा प्रण है। विकास एवं सुशासन और प्रदेशवासियों की प्रगति एवं समृद्धि के लिये इस प्रण को पूरा करने के लिए मध्यप्रदेश सरकार संकल्पित है।"
- डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री
D-11132/24
सीधा प्रसारण
Webcast.gov.in/mp/cmevents
@Cmmadhyapradesh @jansampark.madhyapradesh
@Cmmadhyapradesh @jansamparkMP
JansamparkMP
मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी
आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2024